आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

वर्ष-3, अंक-06

जून, 2024

जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए वैश्विक प्रयास

प्रस्तावना : माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः ऋग्वेद के इस वाक्य को हम भूल गए जिसके कारण जलवायु परिवर्तन आज भारत के साथ साथ विश्व की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है, इस समस्या के समाधान के लिए सभी देशों को एकजुट होकर प्रयास करने की आवश्यकता है। इस लेख में, हम जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए किए जा रहे वैश्विक प्रयासों पर चर्चा करेंगे।

जलवायु परिवर्तन की गंभीरता : जलवायु परिवर्तन के कारण दुनिया भर में मौसम की चरम घटनाओं में वृद्धि हो रही है, जैसे बाढ़, सूखा, तूफान और जंगल की आग। ग्लेशियरों का पिघलना और समुद्र का स्तर बढ़ना भी इसके प्रमुख लक्षण हैं, इससे मानव जीवन के साथ सभी प्राणी प्रभावित हैं।

पेरिस समझौता : 2015 में पेरिस में आयोजित संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (COP21) में पेरिस समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे। इसका मुख्य उद्देश्य वैश्विक तापमान वृद्धि को 2 डिग्री सेल्सियस से नीचे रखना और तापमान वृद्धि को 1.5° सेंटीग्रेट तक सीमित रखना। इस समझौते में सभी देशों से अपेक्षा की गई है कि वे अपने ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान प्रस्तुत करके उसे पूरा करें।

नवीकरणीय ऊर्जा का प्रसार: बढ़ती ऊर्जा मांग को देखते हुए नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग बढ़ाया जा रहा है। सौर, पवन, जलविद्युत और जैव ऊर्जा जैसे स्रोतों का उपयोग करके कार्बन उत्सर्जन को कम किया जा सकता है। इस पर कई देशों ने कार्य किए हैं उदाहरण के लिएए जर्मनी की ऊर्जा परिवर्तन नीति (Energiewende) और भारत का अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA)।

वृक्षारोपण और वन संरक्षण: वृक्षारोपण और वन संरक्षण जलवायु परिवर्तन से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पेड़ कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं, जिससे वायुमंडलीय संतुलन बना रहता है। कई देशों ने बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण कार्यक्रम शुरू किए हैं, जैसे भारत का 'मिशन हरित भारत' और अफ्रीका का 'महान ग्रीन वॉल' परियोजना।

ग्रीन टेक्नोलॉजी और नवाचार: इस योजना के अन्तर्गत इलेक्ट्रिक वाहनों का प्रसार, ऊर्जा-संवर्धन तकनीक, और कचरा प्रबंधन में सुधार जैसी पहलें महत्वपूर्ण हैं। कंपनिया और सरकारें मिल कर कार्य कर रहे हैं।

जलवायु परिवर्तन से निपटने में अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत की भागीदारी:

1. पेरिस समझौता 2015 : भारत ने पेरिस समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं और जलवायु परिवर्तन के खिलाफ वैश्विक लड़ाई में सक्रिय रूप से भाग लिया है। भारत ने राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDCS) प्रस्तुत किए हैं, जिसमें 2030 तक अपने GDP की उत्सर्जन तीव्रता को 33-35ः तक कम करने का लक्ष्य रखा है।

2. अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA): प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फ्रांस के साथ मिलकर 2015 में अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन की स्थापना की। इसका उद्देश्य सौर ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देना और सदस्य देशों को तकनीकी और वित्तीय सहयोग प्रदान करना है।

नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश: 1. राष्ट्रीय सौर मिशनः भारत सरकार ने राष्ट्रीय सौर मिशन के अन्तर्गत तीव्र गति से कार्य किया है वर्तमान में भारत दुनिया के सबसे बड़े सौर ऊर्जा उत्पादकों में से एक है।

2. पवन ऊर्जाः भारत ने पवन ऊर्जा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण प्रगति की है। गुजरात, तमिलनाडु, और राजस्थान जैसे राज्यों में बड़े पैमाने पर पवन ऊर्जा परियोजनाएँ संचालित हो रही हैं।

वृक्षारोपण और वन संरक्षण: 1. मिशन हरित भारतः इस मिशन के तहत भारत ने बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण अभियान शुरू किया है। राज्य सरकारें और विभिन्न संगठन मिलकर कार्य कर रहे हैं

3. राष्ट्रीय वन नीतिः भारत की राष्ट्रीय वन नीति का उद्देश्य देश में वन संरक्षण और संवर्धन के लिये प्रयास करना है जिसके लिए विभिन्न योजनाएं कार्यान्वित हैं।

ग्रीन टेक्नोलॉजी और नवाचार: 1. इलेक्ट्रिक वाहन नीति : भारत ने इलेक्ट्रिक वाहनों के प्रसार को बढ़ावा देने के लिए फास्टर अडाप्शन एंड मैन्युफैक्चरिंग ऑफ हाइब्रिड एंड इलेक्ट्रिक व्हीकल योजना शुरू की है। इसका उद्देश्य 2030 तक देश में इलेक्ट्रिक वाहनों की संख्या को बढ़ाना और पेट्रोल-डीजल के उपयोग को कम करना है।

4. स्मार्ट सिटी मिशन: स्वच्छ भारत अभियानः स्वच्छ भारत अभियान के तहत न केवल स्वच्छता बल्कि कचरे के प्रबंधन पर भी जोर दिया जा रहा है।

5. उजाला योजनाः ऊर्जा की खपत कम करने के लिए इस योजना के तहत एलईडी बल्बों का वितरण किया गया।

निष्कर्ष: जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए वैश्विक प्रयास समय की आवश्यकता है। सभी देशों को एकजुट होकर इस दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे। नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग, वृक्षारोपण, ग्रीन टेक्नोलॉजी और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से हम इस समस्या का समाधान कर सकते हैं। हर व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी समझकर पर्यावरण संरक्षण में योगदान देना चाहिए, ताकि हम अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित और स्वस्थ पृथ्वी छोड़ सकें।

प्रकाशक : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर, 273007

जून माह विशेष

योग दिवस

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की जड़ें 11 दिसंबर, 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) के प्रस्ताव में हैं, जिसमें 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में घोषित किया गया था। यह प्रस्ताव प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा सितंबर में ग्रीष्म संक्रांति के दिन 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में नामित करने के प्रस्ताव के रूप में था।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त कार्यक्रम है जिसने एक सांस्कृतिक सेतु के रूप में कार्य किया है और शांति और सद्भाव के लिए दुनिया को एकजुट किया है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के लाभ इस प्रकार हैं- वैश्विक जागरूकता, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का उद्देश्य योग अभ्यास के असंख्य लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और दुनिया भर के लोगों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना है।

समग्र कल्याण- यह दिन शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक कल्याण और आध्यात्मिक विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण के रूप में योग को बढ़ावा देता है, जो सभी उम्र और क्षमताओं के लोगों के लिए सुलभ है।

एकता को बढ़ावा देना- अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस विभिन्न संस्कृतियों और पृष्ठभूमियों के लोगों के लिए एक मंच प्रदान करता है, ताकि वे एक साथ आकर योग को एक एकीकृत शक्ति के रूप में अपना सकें तथा एकता की भावना को बढ़ावा दे सकें।

मानसिक स्वास्थ्य- योग अपने तनाव-मुक्ति और मानसिक स्वास्थ्य लाभों के लिए जाना जाता है, जो इसे आज की आधुनिक दुनिया में एक आवश्यक अभ्यास बनाता है।

स्वयं और समाज के लिए योग- इस दिवस का उ१ेश्य योग को एक वैश्विक आंदोलन के रूप में फैलाना है, तथा सामाजिक स्वास्थ्य समस्याओं और कल्याण के बारे में जागरूकता बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करना है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2024 की थीम- महिला सशक्तिकरण के लिए योग हर साल योग दिवस के लिए एक खास थीम तय की जाती है। इस साल यानी 10वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की थीम महिलाओं पर आधारित है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2024 की थीम 'महिला सशक्तिकरण के लिए योग' (Yoga for Women Empowerment) है। यह थीम महिलाओं को सशक्त बनाने और उन्हें स्वस्थ और खुशहाल जीवन जीने में मदद करने के लिए योग की शक्ति पर प्रकाश डालती है।

महिला सशक्तिकरण के लिए योग- योग एक प्राचीन भारतीय विधि है जो शारीरिक, मानसिक और आत्मिक संतुलन को स्थापित करने में सहायक है। यह न केवल शरीर को स्वस्थ रखता है, बल्कि मन को भी शांति और संतुलन प्रदान करता है। महिलाओं के लिए योग का महत्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि यह उन्हें तनाव, चिंता और अवसाद से निपटने में मदद करता है, जिससे वे अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं में बेहतर प्रदर्शन कर सकती हैं।

महिला सशक्तिकरण के लिए योग थीम के तहत विभिन्न कार्यक्रमों और कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। इन कार्यक्रमों में महिलाओं को योग के विभिन्न आसनों और ध्यान की तकनीकों से अवगत कराया जाएगा, जिससे वे अपनी शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को सुधार सकें। विशेष रूप से गर्भवती महिलाओं और नई माताओं के लिए योग के लाभ अद्वितीय हैं, क्योंकि यह प्रसव पूर्व और प्रसव बाद के तनाव को कम करने में मदद करता है और शरीर को पुनः स्वस्थ करता है। योग के माध्यम से महिलाएं अपनी आंतरिक शक्ति को पहचान सकती हैं और आत्मविश्वास से परिपूर्ण हो सकती हैं। यह न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है, बल्कि आत्मसम्मान और मानसिक शांति को भी सुधारता है। योग के नियमित अभ्यास से महिलाएं अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकती हैं और विभिन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए अधिक सक्षम बन सकती हैं।

हमारी विरासत

रामानुजाचार्य

रामानुजाचार्य विशिष्टाद्वैत वेदान्त के प्रवर्तक थे। वह ऐसे वैष्णव सन्त थे जिनका भक्ति परम्परा पर बहुत गहरा प्रभाव रहा। वैष्णव मत की पुनरु प्रतिष्ठा करने वालों में रामानुजाचार्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनका जन्म 1017 ई. में मद्रास के समीप पेरुबुदूर गाँव में हुआ था। श्रीरामानुजाचार्य के पिता का नाम केशव भक्त था। जब श्रीरामानुजाचार्य की अवस्था बहुत छोटी थी, तभी इनके पिता का देहावसान हो गया। इन्होंने कांची में यादव प्रकाश नामक गुरु से वेदाध्ययन किया। इनकी बुद्धि इतनी कुशाग्र थी कि ये अपने गुरु की व्याख्या में भी दोष निकाल दिया करते थे। फलतः इनके गुरु ने इन पर प्रसन्न होने के बदले ईर्ष्यालु होकर इनकी हत्या की योजना बना डाली, किन्तु भगवान की कृपा से एक व्याध और उसकी पत्नी ने इनके प्राणों की रक्षा की। इन्होंने कांचीपुरम जाकर वेदांत की शिक्षा ली। रामानुज के गुरु ने बहुत मनोयोग से शिष्य को शिक्षा दी। वेदांत का इनका ज्ञान थोड़े समय में ही इतना बढ़ गया कि इनके गुरु यादव प्रकाश के लिए इनके तर्कों का उत्तर देना कठिन हो गया। रामानुज की विद्वत्ता की ख्याति निरंतर बढ़ती गई। वैवाहिक जीवन से ऊब कर ये संन्यासी हो गए। श्रीरंगम जाकर यतिराज नामक संन्यासी से सन्न्यास धर्म की दीक्षा ले ली। इनके गुरु यादव प्रकाश को अपनी पूर्व करनी पर बड़ा पश्चात्ताप हुआ और वे भी सन्यास की दीक्षा लेकर श्रीरंगम चले आये और श्रीरामानुजाचार्य की सेवा में रहने लगे। अब इनका पूरा समय अध्ययन, चिंतन और भगवत-भक्ति में बीतने लगा। इनकी शिष्य-मंडली भी बढ़ने लगी। यहाँ तक कि इनके पहले के गुरु यादव प्रकाश भी इनके शिष्य बन गए। आगे चलकर आपने गोष्ठीपूर्ण से दीक्षा ली। गुरु का निर्देश था कि रामानुज उनका बताया हुआ मन्त्र किसी अन्य को न बताएं। किंतु जब रामानुज को ज्ञात हुआ कि मन्त्र के सुनने से लोगों को मुक्ति मिल जाती है तो वे मंदिर की छत पर चढ़कर सैकड़ों नर-नारियों के सामने चिल्ला-चिल्लाकर उस मन्त्र का उच्चारण करने लगे। यह देखकर क्रुद्ध गुरु ने इन्हें नरक जाने का शाप दिया। इस पर रामानुज ने उत्तर दिया, यदि मन्त्र सुनकर हज़ारों नर-नारियों की मुक्ति हो जाए तो मुझे नरक जाना भी स्वीकार है।

रामानुजाचार्य के विशिष्टाद्वैत दर्शन में सत्ता या परमसत् के सम्बन्ध में तीन स्तर माने गये हैं। ब्रह्म अर्थात् ईश्वर, चित् अर्थात् आत्म तत्व और अचित् अर्थात् प्रकृति तत्व। वस्तुतः ये चित् अर्थात् आत्म तत्त्व तथा अचित् अर्थात् प्रकृति तत्त्व ब्रह्म या ईश्वर से पृथक नहीं है बल्कि ये विशिष्ट रूप से ब्रह्म के ही दो स्वरूप हैं एवं ब्रह्म या ईश्वर पर ही आधारित हैं। यही रामनुजाचार्य का विशिष्टाद्वैत का सिद्धान्त है। जैसे शरीर एवं आत्मा पृथक नहीं हैं तथा आत्म के उद्देश्य की पूर्ति के लिये शरीर कार्य करता है उसी प्रकार ब्रह्म या ईश्वर से पृथक चित् एवं अचित् तत्त्व का कोई अस्तित्व नहीं हैं। वे ब्रह्म या ईश्वर का शरीर हैं तथा ब्रह्म या ईश्वर उनकी आत्मा सदृश्य हैं।

मध्यकालीन विभूति रामानुजाचार्य ने बौद्धिक आधार पर आदिशंकराचार्य के 'अद्वैतवाद' को कड़ी चुनौती दी अद्वैत कहता है, जो कुछ भी तुम देखते हो, वह माया या भ्रम है। विशिष्टाद्वैत कहता है, जो कुछ भी तुम देखते हो, वह वास्तविक है। इस मत के अनुसार, यद्यपि जगत् और जीवात्मा दोनों ब्रह्म से भिन्न हैं, तथापि वे ब्रह्म से ही उद्भूत हैं और वे ब्रह्म से उसी प्रकार संबद्ध हैं, जैसे सूर्य से उसकी किरणें संबद्ध होती हैं। इन्होंने आदिशंकराचार्य के मायावाद का खंडन किया गया है। शंकराचार्य ने 'जगत को माया' करार देते हुए इसे मिथ्या बताया है। लेकिन रामानुज के अनुसार, जगत का निर्माण भी ब्रह्म ने ही किया है, अतः यह मिथ्या नहीं हो सकता है। उनके अनुसार, माया का अर्थ ईश्वर की अद्भुत रचना-शक्ति से तथा अविद्या का अर्थ जीव की अज्ञानता से है। रामानुज ने शंकराचार्य के मायावाद का खंडन करने के लिये सात तर्क दिये हैं, जिन्हें 'सप्तानुपत्ति' कहा जाता है। उन्होंने ब्रह्मसूत्र की रचना की तथा भगवद् गीता पर भाष्य लिखा। इनकी सभी रचनाएँ संस्कृत भाषा में हैं।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद वार्षिक बैठक

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के संस्था प्रमुखों की बैठक को सम्बोधित करते एवं निरीक्षण के दौरान विश्वविद्यालय प्रबंधन के लोगों को दिशा–निर्देश देते विश्वविद्यालय के माननीय कुलाधिपति

दिनांक : 02 जून, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की सभी संस्थाओं की वार्षिक समीक्षा और भावी कार्ययोजना को लेकर आयोजित बैठक की अध्यक्षता अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के माननीय कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की शैक्षिक व चिकित्सकीय समेत सभी संस्थाओं ने हमेशा अपने–अपने कार्यक्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करते हुए समाज और राष्ट्र के हित में अपनी उपयोगिता प्रमाणित की है। इस उत्कृष्टता को आगे बढ़ाते हुए, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा करते हुए सभी संस्थाएं परिसर संस्कृति को समृद्ध करने और निरंतर नवाचार पर ध्यान देने की तरफ अग्रसर हों। इस शिक्षा परिषद की संस्थाओं ने सामाजिक सहभाग को भी अपने ध्येय का हिस्सा बनाया है। भविष्य में इसका दायरा विस्तृत करने की आवश्यकता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति को अंगीकार करने में अग्रणी भूमिका निभाई है। अब जरूरत है कि हमारी संस्थाएं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों को शत–प्रतिशत अपनाकर अन्य संस्थाओं के लिए रोल मॉडल बनें।

सीएम योगी रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम गोरखपुर में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की सभी संस्थाओं की वार्षिक समीक्षा और भावी कार्ययोजना को लेकर बुलाई गई बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने एक–एक कर सभी संस्थाओं के प्रमुखों से उनकी सालभर की गतिविधियों और उपलब्धियों की जानकारी लीं। आगामी कार्ययोजना को लेकर उनके लक्ष्यों पर अपने सुझाव दिए, संस्थाओं की तरफ से वार्षिक समीक्षा और भावी कार्ययोजना का प्रस्तुतिकरण पावर प्वाइंट 'पीपीटी' डिस्प्ले के जरिये किया गया। बैठक में मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं की गतिविधियों की सराहना की और भावी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अपनी शुभकामनाएं दी।

उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद सिर्फ स्कूल, कॉलेज या अस्पताल खोलने वाली संस्था नहीं हैं। बल्कि इसका ध्येय शिक्षा, स्वास्थ्य व अन्य सेवाओं के माध्यम से समाज व राष्ट्र के सामाजिक विकास में योगदान देना है, इस परिषद की नींव ही इसी भावना के साथ राष्ट्रीयता की भावना का पोषण करने के लिए, राष्ट्र हित में सुयोग्य नागरिक तैयार करने के लिए रखी गई। परिस्थितियां अनुकूल रही हों या प्रतिकूल, परिषद इस समग्र लक्ष्य से कभी भी विचलित नहीं हुई।

मुख्यमंत्री ने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं में अनुशासित परिसर संस्कृति को सदैव प्राथमिकता पर रखा है। परिषद की संस्थाओं ने इस मामले में अनुकरणीय प्रयास किया है। परिसर में अनुशासन की भावना के साथ, स्वच्छता, हरियाली और सबका सबके प्रति सद्भाव रहे, इसका नियमित पर्यवेक्षण करना सभी संस्थाध्यक्षों की जिम्मेदारी है। उन्होंने शिक्षा संस्थाओं में पठन–पाठन और चिकित्सा संस्थाओं में उपलब्ध सुविधाओं की गुणवत्ता में किसी भी तरह की कोताही न बरतने के निर्देश भी दिए, साथ ही कहा कि समय के साथ चलने व आगामी समय से तालमेल बैठाने के लिए शोध–नवाचार आज की मांग है। शिक्षा परिषद की संस्थाओं ने शोध–नवाचार को लेकर जो प्रयास किए हैं, वे सराहनीय है। शोध–नवाचार को लेकर सतत ध्यान देते रहने की आवश्यकता है।

उन्होंने शिक्षा परिषद की संस्थाओं की सामाजिक सहभाग की भी समीक्षा की। यह जाना कि सालभर में किस संस्था ने समाज के बीच जाकर किस तरह अपने सामाजिक सरोकारों को निभाया। उन्होंने कहा कि हर संस्था की जिम्मेदारी बनती है कि वह समाज की उन्नति के लिए, लोगों को स्वावलंबी बनाने के लिए अपने दायरे को बढ़ाए। सीएम ने इस बात पर प्रसन्नता जताई कि परिषद की संस्थाओं ने लगातार अलग–अलग आयामों से जुड़कर समाज की चिकित्सा, शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण व स्वावलंबन के लिए अनवरत कार्यों की श्रृंखला को बनाए रखा है।

बैठक के दौरान मुख्यमंत्री ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं की कार्यपद्धति पर भी विमर्श किया। सभी संस्थाओं की कार्यपद्धति की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि उत्कृष्टता में भी परिमार्जन की गुंजाइश हमेशा रहती है। सीएम ने कहा कि शिक्षा से जुड़ी संस्थाएं विद्यार्थी केंद्रित और चिकित्सा सेवा से जुड़ी संस्थाएं मरीज केंद्रित कार्य प्रणाली का निरंतर उन्नयन करती रहें। जो भी कार्य हों, उनमें

सेवा की भावना सर्वोपरि होनी चाहिए। समीक्षा व भावी कार्ययोजना को लेकर आहुत इस बैठक में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के शताब्दी वर्ष 2032 को भव्य और ऐतिहासिक बनाने के लिए अभी से तैयारी शुरू करने के निर्देश दिए।

उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना 1932 में पूर्वी उत्तर प्रदेश में शैक्षिक पुनर्जागरण और राष्ट्रीय मूल्यों के संरक्षण को लेकर की गई थी। यह परिषद अपने संस्थापक युगपुरुष ब्राह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज और विस्तारक राष्ट्रसंत ब्राह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज के मूल्यों, आदर्शों को संजोते हुए निरंतर प्रगतिमान है। आठ साल बाद यह अपनी यात्रा के शताब्दी वर्ष में होगी। शताब्दी वर्ष तक हमें परिषद की संस्थाओं को एक प्रतिमान के रूप में स्थापित करना है। इसके लिए सभी संस्थाओं के प्रमुख को एक विस्तृत कार्ययोजना तैयार करके अभी से जुट जाना होगा।

सीएम योगी ने महायोगी गोरखनाथ विवि परिसर का सघन निरीक्षण किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय परिसर का सघन निरीक्षण किया और अवस्थापना के साथ अन्य सुविधाओं को लेकर जरूरी दिशा–निर्देश भी दिए। उन्होंने परिसर में बन रहे मेडिकल कॉलेज को गुणवत्तापूर्ण बनाने तथा भवन को भारतीय संस्कृति के प्रतिरूप में दर्शाने की बात कही। सीएम ने परिसर में आडिटोरियम, स्टेडियम, फार्मेसी कॉलेज आदि का भी सघन निरीक्षण किया।

विश्व पर्यावरण दिवस

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधे लगाते हुए विश्वविद्यालय के विद्यार्थी

दिनांक : 05 जून, 2024 को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा आयोजित विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पौधरोपण कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के नर्सिंग संकाय की प्राचार्या डॉ. डी. एस. अजीथा, उपकुलसचिव प्रशासन श्री श्रीकांत महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. राजेश बहल ने विश्वविद्यालय परिसर में स्थित नंदन वन में फलदार पौधे लगाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

इस अवसर पर नर्सिंग संकाय की प्राचार्या डॉ. डी. एस. अजीथा ने कहा कि जैसे प्रकृति हमें हमारे जीवन में हर प्राकृतिक तत्वों को प्रदान कर हमारे जीवन को सुखमय बनाती है तो हम क्यों न प्रकृति को भी कुछ भेंट करें। ऐसा करने से हमारा ही जीवन सुखमय व्यतीत होगा। आज जैसे इस गर्मी से सभी लोग त्राहि–त्राहि कर रहें है जिसका निदान मानव द्वारा निर्मित तमाम वस्तुएं जैसे–वातानुकुलित वस्तु (एसी), कुलर, फ्रिज आदि से भी नहीं मिल रहा। इसका निदान केवल और केवल यही है कि हम पौधे लगाए और प्रकृति के निर्माण में अपना सहयोग दें। तभी हम और हमारा जीवन सफल बनेगा, क्यूँ कि प्रकृति का साथ, हमारा साथ है।

महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. राजेश बहल ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पौधों का जीवन हमारे पर्यावरण के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है और ये हमारे समाज के सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। हम पौधे लगाकर पर्यावरण को संतुलित और सुरक्षित बनाने में मदद कर सकते हैं।

राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दुबे ने कहा कि आज के दिन हमें पर्यावरण के संरक्षण का संकल्प लेना चाहिए और अपने जिम्मेदारी को समझते हुए प्राकृतिक संसाधनों का सम्मान और उसका सही उपयोग करना चाहिए जिससे भविष्य में आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण मिल सकें।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे, माँ पाटेश्वरी सेवाश्रम की अधिक्षिका प्रज्ञा पाण्डेय, डॉ. अमित दुबे, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. अंकिता मिश्रा, डॉ. गौरीश नारायण, डॉ. संध्या पाठक, डॉ. प्रिया एस. आर. नायर, डॉ. देवी आर. नायर, डॉ. रश्मि पुष्पम, डॉ. एस. याश्मीन, डॉ. नवीन के., डॉ. विनम्र शर्मा, डॉ. गोपी कृष्णा, डॉ. परिक्षित देवनाथ, डॉ. विकास यादव, सृष्टि यदुवंशी, धनन्जय पाण्डेय, राष्ट्रीय कैडेट कोर के ए. एन.ओ. डॉ. संदीप श्रीवास्तव, राष्ट्रीय सेवा योजना के समस्त स्वयंसेवक एवं विश्वविद्यालय के विद्यार्थी उपस्थित रहें।

प्रवेश प्रक्रिया

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

दिनांक : 7 जून 2024। शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिष्ठित संस्थान महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में प्रवेश के लिए प्रवेशार्थी जोश और उमंग से भरे हुए हैं। प्रवेश समिति के समन्वयक डॉ. सुनील कुमार सिंह ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में प्रवेश प्रक्रिया के प्रथम चरण के तीसरे दिन 570 प्रतिभागियों ने काउंसलिंग की प्रक्रिया पूरी कर अपनी सीट सुरक्षित कर लिया है। सत्र 2024–25 में विविध विषयों में प्रथम चरण की काउन्सलिंग 5 जून से निरंतर 7 जून तक प्रवेश समिति की देखरेख में सकुशल संपन्न हुई है। प्रथम चरण की प्रवेश सूची में 1100 प्रवेशार्थियों की सूची वेबसाइट पर जारी किया गया। जिसमें 570 प्रवेशार्थियों ने प्रवेश प्रकिया को पूर्ण कर लिया है।

प्रवेश समन्वयक डॉ. सुनील

प्रवेश प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थी एवं अभिभावक

कुमार सिंह ने प्रवेशार्थियों की जिज्ञासा को शांत करते हुए कहा कि प्रवेश प्रकिया में शत–प्रतिशत पारदर्शिता, नियमावली के आधार पर शैक्षणिक प्रमाण पत्रों और अन्य सभी दस्तावेज का निरीक्षण विषय विशेषज्ञो की देखरेख में पूर्ण सावधानी के साथ प्रवेश की प्रकिया पूर्ण किया जा रहा है। जिन अभ्यर्थियों का नाम प्रथम सूची में नहीं है वे निराश न हो, द्वितीय प्रवेश सूची 10 जून तक जारी बेबसाइड पर जारी की जाएगी ।

द्वितीय सूची के प्रवेशार्थी सतर्क रहे प्रवीणता सूची में नाम होने पर निर्धारित समय तक अपनी काउंसलिंग करा के अपनी सीट सुरक्षित कर सकते हैं सभी जानकारी बेबसाइड पर उपलब्ध रहेगी। किसी भी अन्य जानकारी के लिए वेबसाईड पर उपलब्ध हेल्पलाइन नंबर पर संपर्क कर सकते हैं।

डॉ. सुनील सिंह ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में विविध विषयों में प्रवेश परीक्षा में 8500 विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा में सम्मलित हुए थे। सभी चयनित अहर्य अभ्यर्थीयों की सूची विश्वविद्यालय के बेबसाइड पर अपलोड किया गया है। सभी अहर्य अभ्यर्थी अपना प्रवेश शुल्क जमाकर काउंसलिंग की प्रक्रिया को पूर्ण कर रहे है।

काउंसलिंग में बीएससी नर्सिंग, पोस्ट बेसिक बीएससी नर्सिंग, जी.एन.एम, बीएससी हानर्स, बॉयोटेक्नोलॉजी, बॉयोकेमिस्ट्री, माइक्रोबॉयोलॉजी, मेडिकल बॉयोकेमिस्ट्री, मेडिकल माइक्रोबॉयोलॉजी, बीएससी हॉनर्स एग्रीकल्वर, डी. फार्मा, बी. फार्मा एलोपैथी, ए.एन.एम. डिप्लोमा लैब तकनीशियन, इमरजेंसी एंड ट्रामा केयर तकनीशियन, ऑप्टोमेट्री, ऑर्थोपेडिक एंड प्लास्टर तकनीशियन, डायलीसिस तकनीशियन, एनेस्थीसिया एंड क्रिटिकल केयर तकनीशियन, और बी.बी.ए. हॉनर्स लॉजिस्टिक्स में अहर्य प्रवेशार्थी प्रवेश ले रहे हैं।

चयनित अहर्य प्रवेशार्थियों को किसी भी प्रकार की कोई असुविधा न हो इसके लिए कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल बाजपेई एवं कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव निरंतर ने प्रवेश समिति के साथ प्रवेश स्थल का निरीक्षण कर प्रवेश समिति को शुभकामनाएं दिया।

शैक्षिक भ्रमण

फार्मास्युटिकल विज्ञान संकाय

बर्नेट फार्मास्युटिकल प्राइवेट लिमिटेड, जीआईडी, गीडा गोरखपुर में भ्रमण हेतु प्रस्थान करते फार्मास्युटिकल विज्ञान संकाय के विद्यार्थी

दिनांक : 11 जून, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के फार्मास्युटिकल विज्ञान संकाय के डी. फार्म प्रथम वर्ष के छात्रों ने बर्नेट फार्मास्युटिकल प्राइवेट लिमिटेड, जीआईडी, औद्योगिक क्षेत्र, गोरखपुर, एक अग्रणी फार्मास्युटिकल कंपनी का औद्योगिक भ्रमण किया। यह भ्रमण विद्यार्थियों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान करने तथा फार्मास्युटिकल उद्योग की गहन समझ प्रदान करने की संस्थान की प्रतिबद्धता के भाग के रूप में आयोजित किया गया। इस भ्रमण में सदस्य श्री दिलीप मिश्रा और सुश्री नंदिनी जैसवाल के साथ डी. फार्म. प्रथम वर्ष के सभी विद्यार्थी शामिल हुए, जिनका बर्नेट फार्मास्युटिकल की टीम द्वारा स्वागत किया गया। विद्यार्थियों को अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं, गुणवत्ता नियंत्रण इकाइयों तथा उत्पादन लाइनों सहित अत्याधुनिक विनिर्माण सुविधाओं का भ्रमण करने का अवसर मिला।

इस भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों को कंपनी के संचालन का व्यापक अवलोकन कराया गया। उन्होंने प्रारंभिक अनुसंधान तथा पैकेजिंग तक संपूर्ण औषधि विकास प्रक्रिया देखी। इस भ्रमण का एक मुख्य आकर्षण फार्मास्युटिकल उत्पादों की सुरक्षा और प्रभावकारिता सुनिश्चित करने के लिए लागू किए गए कड़े गुणवत्ता नियंत्रण उपायों पर एक विस्तृत प्रस्तुति थी। छात्रों ने विनियामक मानकों के अनुपालन की महत्वपूर्ण भूमिका, अच्छे विनिर्माण अभ्यास (जीएमपी) के महत्व और इन मानकों को बनाए रखने में उद्योग के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में सीखा। फार्मास्युटिकल विज्ञान संकाय, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के प्रधानाचार्य डॉ. शशिकांत सिंह ने, उनके आतिथ्य और अपनी विशेषज्ञता साझा करने लिए बर्नेट फार्मास्युटिकल के प्रबंधक श्री सुशील कुमार जी के प्रति आभार व्यक्त किया। बर्नेट फार्मास्युटिकल का औद्योगिक दौरा फार्मास्युटिकल विज्ञान संकाय, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के उद्योग–अकादमिक सहयोग को बढ़ाने के चल रहें प्रयासों का हिस्सा है, जो छात्रों को उनके अकादमिक अध्ययन के पूरक के रूप में आवश्यक अनुभव प्रदान करता है। संस्थान भविष्य में इस तरह के और दौरे आयोजित करने, व्यावहारिक शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देने और छात्रों को फार्मास्युटिकल उद्योग में सफल करियर के लिए तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध है।

समझौता ज्ञापन — महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

समझौता ज्ञापन के दौरान महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो एवं भारतीय बीज विज्ञान संस्थान के पदाधिकारीगण

दिनांक : 11 जून, 2024 को कृषि क्षेत्र में अनुसंधान व शैक्षणिक कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करने के लिए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतर्गत संचालित दो प्रमुख संस्थानो के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये।

इन ज्ञापनों पर हस्ताक्षर गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव और मऊ स्थित राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो के निदेशक डॉ. आलोक कुमार श्रीवास्तव व भारतीय बीज विज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ. संजय कुमार ने किया।

इस समझौतों के तहत सहयोग के प्रमुख क्षेत्रों मे कृषि आधारित अनुसंधान विशेषकर कृषि में सूक्ष्म जीवों की उपयोगिता, उनके अधिग्रहण और प्रबंधन में सहयोग व कृषि के सतत् विकास के लिए संबंधित अनुसंधान और कौशल बढ़ाने के लिए क्षमता विकास और विनिमय कार्यक्रम शामिल है।

भारतीय बीज विज्ञान संस्थान से हुए समझौता का मुख्य उद्देश्य गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय आवश्यकता के अनुरूप गुणवत्तायुक्त बीजों के उत्पादन एवं आपूर्ति से अवगत कराना, बीज प्रमाणीकरण, परीक्षण, रोग मुक्त बीज उत्पादन की विधियों से परिचित कराने के साथ–साथ बीजों के सुरक्षित भंडारण के क्षेत्र में विशेषज्ञता को बढ़ावा देना है।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल बाजपेई ने संस्थानों के मध्य हुए समझौतों का स्वागत करते हुए इसे कृषि शिक्षा के प्रचार–प्रसार व अनुसंधान के क्षेत्र में साझा उद्देश्यों के प्रति मिल का पत्थर बताया।

राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो के निदेशक डॉ. आलोक कुमार श्रीवास्तव व भारतीय बीज विज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ. संजय कुमार ने गोरखनाथ विश्वविद्यालय के साथ हुए समझौता करार पर हर्ष व्यक्त करते हुए संयुक्त रूप से कहा कि शोध का मुख्य उद्देश्य कृषि क्षेत्र में विकास, नवाचार को प्रोत्साहित करना एवं किसानों के जीवनयापन में सतत् सुधार है। इस समझौते से 'लैब टू लैण्ड' की परिकल्पना चरितार्थ होगी।

समझौता ज्ञापन के समय उपमहानिदेशक कृषि (फसल विज्ञान प्रभाग) डॉ. तिलक राज शर्मा, उपमहानिदेशक कृषि (प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन संस्थान) डॉ. सुरेश कुमार चौधरी, कृषि अधिष्ठाता गोरखनाथ विश्वविद्यालय डॉ. विमल कुमार दूबे, सहायक आचार्य डॉ. प्रवीन कुमार सिंह, वैज्ञानिक डॉ. हिलोल चक्दर व वैज्ञानिक डॉ.कुलदीप जायसवाल उपस्थित रहें।

साप्ताहिक योग शिविर एवं शैक्षिक कार्यशाला — महायोगी गुरु गोरखनाथ योग संस्थान एवं महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद

दिनांक : 15 जून, 2024। गोरखनाथ मन्दिर स्थित महायोगी गुरु गोरखनाथ योग संस्थान एवं महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् गोरखपुर के द्वारा आयोजित साप्ताहिक योग शिविर एवं शैक्षिक कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित आयुष विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति प्रो. ए.के. सिंह ने कहा कि योग हमारे तन मन व बुद्धि को स्वस्थ रखने के साथ ही हमारे अहंकार को खत्म करता है। पिछले दस वर्षों में योग दिवस को पुरे विश्व में मान्यता मिली है। हमारा निवेदन है कि आप सभी अपने जीवन में योग अपनाइए और रोग भगाइए। उन्होंने सभी को प्रतिदिन स्वयं योग करने व अपने परिवार तथा मित्रों को भी योग करवाने का शपथ दिलाया।

मुख्य वक्ता के रूप में गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग सोनबरसा गोरखपुर की प्राचार्य डॉ. डी. एस. अजीथा ने कहा कि योग हमारे देश की प्राचीन विद्या है पहले जब हमारे आसपास इतने चिकित्सालय नहीं थे तब लोग योग के द्वारा अपने रोगों का इलाज करते थे। योग के द्वारा किसी भी रोग का इलाज संभव है। उसके लिए हमें प्रतिदिन 30 मिनट इसका अभ्यास करना होगा।

उन्होंने कहा कि प्राणायाम हमारे जीवन में प्रकाश लाता है। आज जिम में लोग जाने लगे हैं, जिम में हमारी शरीर स्वस्थ हो सकती है किंतु मन स्वस्थ नहीं हो सकता। आज हम लोगों को हार्ट अटैक की समस्या बढ़ गई है इसका कारण शरीर में कोलेस्ट्रॉल की अधिकता है। हम जब योग करते हैं तो हमारे शरीर में मेटाबॉलिज्म बनता है जो हमारे कोलेस्ट्रॉल को घटाता है, इसके द्वारा हमारा नर्वस सिस्टम सक्रिय हो जाता है।

विशिष्ट वक्ता के रूप उपस्थित महायोगी गोरखनाथ

विश्वविद्यालय स्थित आयुर्वेद महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. मंजूनाथ ने कहा कि योग एक ऐसी विद्या है जो पूरी तरह से मुफ्त में हमें स्वस्थ रखती है। हमारी दिनचर्या में योग अपनाने से हम न केवल स्वस्थ रहेंगे अपितु हम अपने जीवन के उद्देश्यों को सफलता से प्राप्त कर सकते हैं। योग विज्ञान हमारे शरीर के अंदर शारीरिक एवं मानसिक वातावरण को सुंदर बनाता है। प्राणायाम और षट्कर्म के द्वारा हमारी शरीर पुष्ट एवं निरोगी होती है।

समारोह की अध्यक्षता कर रहे महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष प्रोफेसर यू.पी. सिंह ने कहा कि योग हमारे भारत देश एवं पूरे विश्व की अमूल्य निधि है। योग को समझने के लिए हमें गीता का अध्ययन करना चाहिए गीता का प्रत्येक अध्याय योग है महात्मा गांधी ने कहा है कि मैं जब तनाव युक्त होता हूं तो गीता माता की गोंद में चला जाता हूं उसमें मुझे सभी समस्याओं का समाधान मिल जाता है योग ही एकमात्र ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम तन मन बुद्धि और आत्मा को स्वस्थ और सुखी बना सकते हैं।

कार्यक्रम का प्रारंभ आचार्य डॉ. प्रांगेश मिश्र के मंगलाचरण व छात्र आदित्य पाण्डेय विवेक पाण्डेय के गोरक्षाष्टक पाठ से हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन डॉ. अरविन्द कुमार चतुर्वेदी ने किया।

इस अवसर पर गोरखनाथ मन्दिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल बाजपेयी, डॉ. रामजन्म सिंह, डॉ. प्रदीप कुमार राव, डॉ. अजय कुमार पाण्डेय, डॉ. रोहित मिश्र, डॉ. दिग्विजय शुक्ल, बृजेश मणि मिश्र, डॉ. अभिषेक पाण्डेय, पुरुषोत्तम चौबे, दीपनारायन सहित शिक्षा परिषद् की विभिन्न संस्थाओं के छात्र एवं छात्राएं उपस्थित रहीं।

लेखन प्रतियोगिता — गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ़ नर्सिंग

योग दिवस पर आयोजित महिला सशक्तिकरण हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते नर्सिंग कॉलेज की छात्राएं

दिनांक : 19 जून, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंतर्गत संचालित गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ़ नर्सिंग, बालापार रोड, सोनबरसा गोरखपुर के विद्यार्थियों द्वारा योग दिवस के तहत महिला सशक्तिकरण थीम पर हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रतियोगिता में नर्सिंग कॉलेज के विभिन्न पाठ्यक्रमों के कुल 23 विद्यार्थी सम्मिलित हुए। कार्यक्रम के प्रभारी सुश्री श्वेता अल्बर्ट, सुश्री नैंसी मिश्रा के नेतृत्व में संपन्न कराई गई।

विश्व योग दिवस — महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

विश्व योग दिवस के अवसर पर आयोजित योग कार्यक्रम में प्रतिभाग करते हुए विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति, प्राध्यापक एवं विद्यार्थीगण

दिनांक : 21 जून, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा 10 वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योगाभ्यास कार्यक्रम कराया गया। जिसका शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल बाजपेई एकर्नल डॉ. राजेश बहल निदेशक महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय गोरखपुर एवं डॉ. मंजूनाथ एन.एस. ने द्वीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उसके उपरान्त डॉ. मंजूनाथ एन. एस. प्राचार्य गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस एवं योग प्रशिक्षक श्री चन्द्रजीत यादव ने सभी को विभिन्न प्रकार के योग सूक्ष्मयौगिक व्यायाम (शितीलीकरण की क्रिया), योगासनः खड़े होकर किये जाने वाले आसन.ताडासन, वृक्षासन, पादहस्तासन, अर्धचन्द्रासन, त्रिकोणासन बैठकर किये जाने वाले आसन– भद्रासन, अर्ध शशाकासन, वक्रासन, उत्तानमंण्डुकासन उदर के बल लेटकर किये जाने वाले आसन भुजंगासन, शलभासन, मकरासन पीठ के बल लेटकर किये जाने वाले आसन. सेतुवन्धासन, पवनमुक्तासन, कपालभाति क्रिया, प्राणायाम, अनुलोम विलोम, नाडी शोधन, शीतली, भ्रामरी (उद्दगीत) शाम्भवी मुद्रा में ध्यान एवं अंत में शांति पाठ के साथ योगाभ्यास कराया गया। डॉ. मंजूनाथ ने सभी योग मुद्रा करने के तरीके एवं उससे होने वाले फायदे के बारे में बताया वही श्री चन्द्रजीत यादव ने सभी योग मुद्रा करके दिखाया। कार्यक्रम की अगली कड़ी में विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल कुमार बाजपेई ने 10वें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर उपस्थित सभी को शुभकामनाये देते हुए बताया कि आज हम सभी ने जो योग के माध्यम से सिखा है उसे आत्मसाध करना चाहिए, योग प्राचीन भारतीय परम्परा एवं संस्कृति की अमूल्य देन है। योग मात्र व्यायाम नहीं है, बल्कि स्वयं और प्रकृति के साथ बीच संयम एवं संतुलन है योग। दिमागी तनाव के बीच मन की शांति है योग। विचलित करने वाले क्षणों से निकालकर ध्यान और एकाग्रता को बढ़ाता है योग। निराशा और भय के बीच योग आशा, शक्ति और साहस है। योग मन को शांति देता है। वे लोग जिनके मन में शांति है वह दूसरों को भी शांति देते हैं इसलिए हम सभी को जिंदगी अच्छे से जीने के लिए प्रतिदिन योग करते रहना चाहिए। कार्यकम समन्वयक राष्ट्रीय सेवा योजना डॉ. अखिलेश कुमार दुबे ने इस अवसर पर सभी को शपथ दिलाया। 'मैं शपथ लेता/लेती हूँ कि मैं स्वयं तथा अपने परिवार के साथ नियमित

रूप से योगाभ्यास कर योग को जीवन शैली के रूप में आत्मसात करूंगा/करूंगी, मैं अपने कर्तव्य निर्वहन के प्रति, कुटुंब एवं कार्य के प्रति तथा समाज एवं समूचे विश्व में शांति, स्वास्थ्य और सौहार्द के प्रसार के लिए कृत संकल्पित रहूँगा/रहूँगी।

कार्यक्रम के अन्त में प्रो. शशिकांत सिंह संकायाध्यक्ष फार्मेसी संकाय ने आए सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया एवं छात्रा अंजली एकुसुम काजल ने राष्ट्रीय गीत वन्देमातरम गाकर कार्यक्रम का समापन किया। कार्यक्रम में उप कुलसचिव (प्रशासन) श्री श्रीकांत, डॉ. विकाश यादव, डॉ. कीर्ति कुमार यादव, प्रज्ञा पाण्डेय, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव, कुंवर अभिनव सिंह राठोर, डॉ. अभिषेक सिंह, सुमन सिंह, प्रिया सिंह, शक्ति जायसवाल, साक्षी प्रजापति, कविता साहनी, अंकिता, स्मृति, अविनाश कमल, कमलनयन श्रीवास्तव, ओंकार, अनिल कुमार पाल तथा रवि यादव इत्यादि विश्वविद्यालय के सभी शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थी योगाभ्यास में सम्मिलित हुए।

कार्यशाला

गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ़ नर्सिंग

वर्कशॉप में मौजूद प्राध्यापकगण

दिनांक : 21 एवं 22 जून, 2024 को गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग में कॉन्फ्रेंस रूम में शिक्षा ग्रहण वर्कशॉप आयोजित किया गया, जिसमें गोरखपुर क्षेत्र में स्थित चंद्रमौली नर्सिंग कॉलेज, सावित्री नर्सिंग कॉलेज एवं संकर नर्सिंग कॉलेज के शिक्षक शामिल हुए इसमें सुश्री सोसन दान नर्सिंग ट्यूटर का विषय मिशन निरामया क्यूं लाया गया। इसका उद्देश्य नर्सिंग स्टूडेंट्स और नर्सिंग केयर कैसे बढ़ाएं इसके बारे में जानकारी दी और दूसरा चर्चा का विषय नर्सिंग पारिस्थितिकी तंत्र और संस्थागत पाठ्यक्रम योजना जिसमें जीएनएम, एवं एनएम और बीएसइ, नर्सिंग कोर्स के कॉपिटेंसी के बारे में 3 ग्रुप में चर्चा किया गया कि कैसे सभी कोर्स के स्टूडेंट्स की कॉम्पटेंसी जैसे कि नॉलेजए स्किल्स और एटीट्यूड को कैसे बढ़ाया जा सकता हैं। आगे इसमें चर्चा श्रीमती रिंकी सिंह नर्सिंग ट्यूटर द्वारा बताया गया। नर्सिंग कॉलेज में प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षण वातावरण, कक्षा व्यवस्था, उत्तेजना क्षेत्र और नैदानिक क्षेत्र की तैयारी कैसा होना चाहिए। सुश्री ईश्वरी के. असिस्टेंट प्रोफेसर ने बताया इंटरएक्टिव प्रेजेंटेशन तैयार और प्रस्तुत करना, ऑब्जेक्ट टू प्लेनेट प्रेजेंटेशन, प्रेजेंटेशन पर आपका प्रभाव, प्रेजेंटेशन के दौरान आपके प्रश्न पूछने का कौशल के बारे में जानकारी दिया। श्रीमती ममता रावत असिस्टेंट प्रोफेसर का विषय ज्ञान मूल्यांकन जिसका उद्देश्य ज्ञान मूल्यांकन कैसे कर सकते हैं ज्ञान जांच सूची और कक्षा टेस्ट द्वारा विषय ज्ञान का मूल्यांकन पर चर्चा किया और दिनांक 22.6.2024 कॉन्फ्रेंस रूम में शिक्षा ग्रहण वर्कशॉप जिसमें चंद्रमौली नर्सिंग कॉलेज, सावित्री नर्सिंग कॉलेज एवं संकर नर्सिंग कॉलेज के शिक्षक शामिल हुए इसमें सुश्री सोसन दान का विषय पूर्व एवं पश्चात ज्ञान मूल्यांकन के बारे बताया। श्रीमती रिंकी सिंह नर्सिंग ट्यूटर का विषय छात्र की योग्यता ट्रैकिंग सामुदायिक रोटेशन योजना में शामिल किया जाने वाले क्षेत्र के बारे में जानकारी दी। सुश्री ईश्वरी के. असिस्टेंट प्रोफेसर का विषय छात्र द्वारा निष्पादित की जाने वाली प्रक्रिया और नैदानिक उद्देश्य और नैदानिक रोटेशन योजना को विकसित और कार्यान्वित करना और सामुदायिक स्वास्थ्य में एक छात्र द्वारा दक्षताएँ हासिल की जानकारी आवश्यक हैं और श्रीमती ममता रावत असिस्टेंट प्रोफेसर का विषय स्व-मूल्यांकन नैदानिक समन्वय समिति ज्ञान मूल्यांकन जिसका उद्देश्य समिति दल संरचना के साथ वस्तुनिष्ठ और कोई प्रतिक्रिया नैदानिक अभ्यास प्रक्रिया प्रशिक्षण पर चर्चा किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल बाजपेई एवं कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव कुलसचिव एवं अन्य शिक्षक उपस्थित रहें।

बीएएमएस: प्रथम व्यावसायिक परीक्षा

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस

बीएएमएस प्रथम व्यावसायिक परीक्षा में सम्मिलित होते परिक्षार्थी

दिनांक : 22 जून, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस आयुर्वेद संकाय मे बीएएमएस प्रथम व्यावसायिक सत्र 2022-23 की प्रथम व्यावसायिक परीक्षा महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय द्वारा प्रारंभ हुई। विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक श्री अमित सिंह ने बताया कि बीएएमएस की परीक्षा 22.06.2024 से 10.07.2024 तक चलेगी। इसके बाद विद्यार्थियों की प्रायोगिक परीक्षा करायी जाएगी। सेंटर सुपरिटेंडेंट डॉ. प्रिया एस आर नैय्यर ने बताया की परीक्षा पूरे पारदर्शिता एवं शुचिपूर्ण तरीके से एनसीआईएसएम के नियमों के अनुरूप करायी जा रही हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल बाजपेई, कुलसचिव डॉ. प्रदीप राव,

आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ मंजूनाथ समय–समय पर परीक्षा केंद्र का औचक निरीक्षण करते रहते हैं।

आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. मंजूनाथ ने बताय की पूरे उत्तर प्रदेश मे बीएएमएस 2022.23 सत्र की परीक्षा पाठ्यक्रम पूर्ण करके सर्वप्रथम और समय से पूर्ण कराने का श्रेय महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय को जाता है।

अतिथि व्याख्यान एवं चिकित्सकीय परामर्श

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस

आयुर्वेद कॉलेज में आयोजित अतिथि व्याख्यान में सम्बोधित करते हुए मरीजों को चिकित्सकीय परामर्श देते हुए डॉ. गिरेन्द्र सिंह तोमर जी

दिनांक : 22 जून, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस, आयुर्वेद संकाय के रोग निदान एवं विकृति विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित व्याख्यान 'ब्रोंकिओल अस्थमा–तामक श्वास' विषय पर विशिष्ट अतिथि डॉ. गिरेन्द्र सिंह तोमर, पूर्व प्राचार्य लाल बहादुर शास्त्री आयुर्वेदिक महाविद्यालय एवं चिकित्सालय एवं विश्व आयुर्वेद परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने विद्यार्थियों को अस्थमा से बचाव पर व्याख्यान दिया।

डॉ. तोमर ने बताया कि अस्थमा एक दीर्घकालिक श्वसन रोग है जिसमें श्वास नलिकाएं सूज जाती हैं और संकीर्ण हो जाती हैं, जिससे श्वास लेने में कठिनाई होती है। इसके लक्षणों में खांसी, घरघराहट, सीने में जकड़न और सांस की कमी शामिल हैं। अस्थमा का दौरा एलर्जी, धूल, धुएं, ठंड, शारीरिक गतिविधि या तनाव से ट्रिगर हो सकता है। इसका इलाज इनहेलर, दवाओं और जीवनशैली में बदलाव से किया जाता है। सही उपचार और देखभाल से अस्थमा को नियंत्रित किया जा सकता है, जिससे रोगी सामान्य जीवन जी सकते हैं। आयुर्वेद में अस्थमा को 'तामक श्वास' कहा जाता है। यह वात और कफ दोष के असंतुलन के कारण होता है। इसके उपचार में औषधियों के साथ–साथ प्राणायाम, पंचकर्म, विशेष आहार और जीवनशैली में बदलाव की सलाह दी जाती है। तुलसी, अदरक, मुलेठी, शिरीष और हल्दी जैसी जड़ी–बूटियां लाभकारी मानी जाती हैं। आयुर्वेद में तामक श्वास (अस्थमा) की चिकित्सा में वात और कफ दोष को संतुलित करने पर जोर दिया जाता है। इसके अलावा, योग और प्राणायाम जैसे अनुलोम.विलोम और भस्त्रिका श्वास तकनीकें श्वसन तंत्र को मजबूत बनाने में सहायक होती हैं। समग्र दृष्टिकोण से शरीर और मन को संतुलित किया जाता है। अस्थमा के नए उपचार और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए प्रतिवर्ष मई के पहले मंगलवार को विश्व अस्थमा दिवस (विश्व अस्थमा दिवस) मनाया जाता है। इस दिवस का मुख्य उद्देश्य अस्थमा से संबंधित मिथकों और भ्रांतियों को दूर कर लोगों में इस बीमारी के प्रति जागरूकता फैलाना है। अतिथि व्याख्यान मे आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. मंजूनाथ एन.एस. महंत दिग्विजयनाथ चिकित्सालय के डायरेक्टर डॉ. राजेश बहल, रोग निदान विभाग के सहायक आचार्य डॉ. सार्वभौम सहित डॉ. दीपू, डॉ. अश्वथि, डॉ. प्रज्ञा, डॉ. अभिजीत, श्री साध्वी नंदन पाण्डेय सहित सभी चरक सत्र के विद्यार्थी उपस्थित रहें। रोग निदान विभाग की सह आचार्या डॉ. संध्या पाठक ने कार्यक्रम के अंत मे विशिष्ट अतिथि एवं कार्यक्रम मे उपस्थित सभी श्रोताओं का आभार प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन चरक सत्र की छात्रा कुमारी शाम्भवी शुक्ला ने किया।

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज बालापार में निशुक्ल आयुर्वेदिक स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर में देखे गए 148 मरीज गुरू गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज बालापार में निःशुल्क आयुर्वेद चिकित्सा शिविर में डॉ. जी.एस. तोमर ने 148 मरीजों को निःशुल्क चिकित्सकीय परामर्श दिया।

डॉ. जी. एस. तोमर ने कहा कि आयुर्वेद विश्व की प्राचीन चिकित्सा पद्धति है। आज के समय में दुनिया आयुर्वेद चिकित्सा का तेजी से अनुसरण कर रहे हैं। आयुर्वेद में जीवनशैली परिवर्तन, प्राकृतिक चिकित्सा और आहार पर ध्यान दिया जाए तो जटिल और गंभीर रोग का उपचार शत–प्रतिशत संभव है। योग, प्राणायाम और ध्यान के साथ नियमित चिकित्सीय परामर्श से रोगी निरोग रहकर स्वस्थ जीवन जी सकते है। गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज द्वारा आयोजित निःशुल्क आयुर्वेद चिकित्सा शिविर में डॉ. जी. एस. तोमर ने शिविर में विभिन्न रोगों से ग्रसित 148 रोगियों को उपचार परामर्श दिया। उन्होंने कहा कि आज के समय में अस्थमा, स्पाइन, गठिया और अन्य समस्याएं खान–पान अनियमित दिनचर्या से प्रभावित हो रही है। सही उपचार के लिए आयुर्वेद में जीवनशैली परिवर्तन, प्राकृतिक चिकित्सा और आहार पर ध्यान देने की आवश्यकता है। योग, प्राणायाम और ध्यान से जटिल रोगों को नियंत्रित किया जा सकता है।

ओपीडी में मरीजों को चिकित्सकीय परामर्श देते हुए कहा कि डॉक्टर तोमर ने कहा कि आजकल लोगों का आयुर्वेद की तरफ रुझान बढ़ रहा हस क्योंकि इसका कोई साइड इफेक्ट नहीं है

और आसपास की जड़ी बूटियां से और खानपान में सुधार करके हम अपना स्वस्थ जीवन जी सकते हैं।

शिविर में गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के निदेशक डॉ. कर्नल राजेश बहल ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर शिक्षा के साथ चिकित्सा क्षेत्र में भी जन मानस की सेवा करने का पुनीत कार्य कर रहा है। डॉ. जी. एस. तोमर जी आयुर्वेद चिकित्सा क्षेत्र में प्रतिष्ठित है। आज के समय में हर मानव मानसिक तनाव और दर्द से जूझ रहे है ऐसे में सही समय पर कुशल चिकित्सक की सलाह और उपचार स्वयं की स्वस्थ रखा जा सकता है। आयुर्वेद चिकित्सा में व्यायाम, दवाओं का प्रयोग, चिकित्सा फिजिओथेरेपी, योग या चिकित्सा आसन से चिकित्सा में सुधार हो रहा है।

शिविर में आए सभी मरीजों का शुगर, ब्लड प्रेशर, वजन और अन्य जांच निशुल्क किया गया।

शिविर में आयुर्वेद कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ. एस. एन. मंजुनाथन, गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के निदेशक डॉ. कर्नल राजेश बहल एवं प्रबंधक जी के. मिश्रा सहित सभी चिकित्सकों ने सहयोग किया।

जून माह की मुख्य बैठकें

06 जून 2024	माननीय कुलसचिव जी की अध्यक्षता में एनएसएस के संचालन, नीति, उद्देश्य, टीम भावना, शैक्षणिक कैलेण्डर को प्रभावित किए बिना गतिविधियों का संचालन, समन्वयक/अधिकारियों का मूल्यांकन आदि विषयों पर निर्णय लिया गया।
07 जून 2024	मिशन स्वावलम्बी समिति की बैठक में अभिरक्षिका के अवकाश की सूचना सहअधीक्षिका को देना, निर्माण कार्य के समय छात्राओं द्वारा स्वयं सुरक्षित रहना एवं छात्रावास में छात्राओं का आगामी सत्र में रहने पर निर्णय लिया गया।
07 जून 2024	माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय के प्रवेश समिति की बैठक सम्पन्न हुई।
10 जून 2024	माननीय कुलसचिव जी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में दीक्षारम्भ के प्रथम कक्षा विभागध्यक्ष्ज्ञ/प्राचार्य द्वारा लेना, समय–सारिणी अतिशीघ्र प्रस्तुत करना, लेसन प्लान के अनुसार कक्षाओं का संचालन, प्रायोगिक, क्लीनिकल पोस्टिंग, कॉलेज/विभाग के कार्यक्रम, शिक्षकों की सप्ताह में बैठक, विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान आदि विषयों पर निर्णय लिया गया।
13 जून 2024	माननीय कुलसचिव जी की अध्यक्षता में आयोजित आयुर्वेद कंसल्टेंट बैठक में 30 जून, 2024 तक 80 प्रतिशत एवं 31 जुलाई, 2024 के बाद शत्–प्रतिशत औषधियों/दवाओं की उपलब्धता, इस तिथि के बाद कंसल्टेंट द्वारा लिखा पर्चा बाहर न जाने, फार्मेसी पटल पर औषधियों/दवाओं का उपलब्ध न होने की दशा में फार्मेसी इंजार्ज एवं प्राचार्य की जिम्मेदारी पर निर्णय लिया गया।
22 जून 2024	माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में आई.टी. सेल कोर कमेटी की बैठक में पावर स्वीच लगाने, 3,5,8 मिनट का विश्वविद्यालय का परिचयात्मक विडियों बनाकर वेबसाइट पर अपलोड करने, विश्वविद्यालय की विकास यात्रा की विडियों तैयार करना, विश्वविद्यालय के समस्त संकायों, कॉलेजों एवं विभागों हेतु फ्लैक्स बनैर बनाकर एक समान युनिक बनाए जाने पर निर्णय लिया गया।
22 जून 2024	माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में आई.टी. सेल की बैठक में प्रत्येक कॉलेज, संकाय एवं विभाग के आई.टी. इंचार्ज द्वारा डाटा उपलब्ध कराने, डाटा न मिलने पर प्राचार्य, संकायाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष द्वारा अनुस्मारक दिया जाना, कोई कारण होने पर आई.टी. इंचार्ज द्वारा कारण बताया जाना, 30 जुलाई, 2024 तक वेबसाइट का नेम सर्वन न बदलना, 25 जुलाई 2024 को मुख्य वेबसाई mgug.ac.in पर 01 अगस्त 2024 से 03 अगस्त 2024 मे मध्य अपडेट के कारण वेबसाइट की अनुपलब्धता की सूचना, एंटी रैगिंग पोर्टल पर अण्डरटेकिंग का प्रारूप सम्बंधित कार्यवाही, 10 जुलाई 2024 तक डिजिटल लाइब्रेरी मॉडल साफ्टवेयर का कार्य श्री आनन्द मिश्र एवं मुख्य वेबसाईट mgug.ac.in का श्री ओमकार यादव द्वारा 25 जुलाई 2024 तक पूर्ण करने पर निर्णय लिया गया।
29 जून 2024	माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संस्थान के शैक्षणिक पदों पर नियुक्ति हेतु चयन समिति की बैठक सम्पन्न हुई।

जून माह के प्रमुख आयोजन

राष्ट्रीय सेवा योजना

05 जून 2024	विश्व पर्यावरण दिवस पौधरोपण कार्यक्रम
21 जून 2024	अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर योगाभ्यास कार्यक्रम

राष्ट्रीय कैडेट कोर

05 जून 2024	विश्व पर्यावरण दिवस पर एनसीसी कैडेट्स ने बटालियन द्वारा निर्देशित विषय 'एक कैडेट्स एक पेड़' के ध्येय पर 36 पेड़ लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया।
21 जून 2024	विश्व योग दिवस पर आयोजित योग दिवस में एनसीसी कैडेट्स ने सम्मलित होकर योग की विविध आसनों को नित्य जीवन में अभ्यास का संकल्प लिया।

जुलाई, 2024 प्रस्तावित कार्ययोजनाएं

विश्वविद्यालय

03 से 04 जुलाई, 2024	गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस के शैक्षणिक पदों पर नियुक्ति हेतु चयन समिति की बैठकें
06 जुलाई 2024	विश्वविद्यालय के विद्यापरिषद की बैठक आयोजित की जानी प्रस्तावित है।
07 जुलाई, 2024	विश्वविद्यालय के कार्यपरिषद की बैठक आयोजित की जानी प्रस्तावित है।

राष्ट्रीय सेवा योजना

01 से 07 जुलाई, 2024	वन महोत्सव सप्ताह कार्यक्रम
11 जुलाई, 2024	विश्व जनसंख्या दिवस

राष्ट्रीय सेवा योजना

21 जुलाई, 2024	गुरु पूर्णिमा को एनसीसी कैडेट्स द्वारा तस्मै श्री गुरुवे नमः विषय पर व्याख्यान
26 जुलाई, 2024	कारगिल दिवस पर भावांजलि

जुलाई, 2024 प्रस्तावित कार्ययोजनाएं

विभागीय आयोजन

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस

01 जुलाई, 2024	चिकित्सक दिवस
11 जुलाई, 2024	सुश्रुत सत्र 2022–23 प्रायोगिक परीक्षा
26 जुलाई, 2024	अतिथि व्याख्यान

सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

16 से 30 जुलाई, 2024	2024–25 सत्र का दीक्षारंभ कार्यक्रम
20 से 30 जुलाई, 2024	एण्ड सेमेस्टर परीक्षा

कृषि संकाय

16 से 30 जुलाई, 2024	सत्र का दीक्षरंभ कार्यक्रम

महंत अवेद्यनाथ पैरामेडिकल कॉलेज

01 से 02 जुलाई, 2024	मुख्य प्रयोगात्मक परीक्षाएं
16 से 30 जुलाई, 2024	सत्र का दीक्षारंभ कार्यक्रम
17 से 23 जुलाई, 2024	मेडिकल लैबोरेटरी टेक्नोलॉजिस्ट सप्ताह

फॉर्मेसी संकाय

28 जून से 10 जुलाई, 2024	बी. फार्मेसी एवं डी. फार्मेसी की मुख्य परीक्षाएं।
16 से 30 जुलाई, 2024	सत्र का दीक्षारंभ कार्यक्रम।

गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग

28 जुलाई, 2024	विश्व हेपेटाइटिस दिवस – गुरु श्री गोरखनाथ अस्पताल में स्वास्थ्य शिक्षा एवं जागरूकता

समाचार दर्पण

विद्यार्थी केंद्रित हों शिक्षण संस्थान : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने की महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं की वार्षिक समीक्षा

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि किसी भी शिक्षण संस्थान को विद्यार्थी केंद्रित होना चाहिए और चिकित्सा संस्थानों को मरीज केंद्रित। इसे ध्यान में रखकर ही इन संस्थानों की योजनाएं बननी चाहिए और उनका क्रियान्वयन होना चाहिए। मुख्यमंत्री रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में आयोजित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं की समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति को अंगीकार करने में अग्रणी भूमिका निभाई है। अब जरूरत है कि हमारी संस्थाएं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रविधानों को शत-प्रतिशत अपनाकर अन्य संस्थाओं के लिए रोल माडल बनें।

संस्था प्रमुखों का हौसला बढ़ाते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि शिक्षा परिषद की संस्थाओं ने हमेशा उत्कृष्ट कार्य करते हुए समाज और राष्ट्र हित में अपनी उपयोगिता प्रमाणित की है। इस उत्कृष्टता को आगे बढ़ाते हुए, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा करते हुए सभी संस्थाएं परिसर संस्कृति को समृद्ध करने और निरंतर नवाचार पर ध्यान देने की ओर अग्रसर हों। इन संस्थाओं ने सामाजिक सहभाग को भी अपने ध्येय का हिस्सा बनाया है। भविष्य में इसका दायरा और बढ़ाने की जरूरत है।

मुख्यमंत्री ने बारी-बारी से संस्था प्रमुखों से वर्ष भर की गतिविधियों और आगामी कार्ययोजनाओं की जानकारी ली। इस दौरान वह सुझाव भी देते रहे। उन्होंने कहा कि शिक्षा परिषद केवल स्कूल, कालेज या अस्पताल खोलने वाली संस्था नहीं है। इसका ध्येय शिक्षा, स्वास्थ्य व अन्य सेवाओं के माध्यम से समाज और राष्ट्र के सामाजिक विकास में योगदान देना है। योगी ने कहा कि शिक्षा परिषद की संस्थाओं ने अनुशासित परिसर संस्कृति को हमेशा प्राथमिकता दी है। इसका नियमित पर्यवेक्षण संस्था प्रमुखों की जिम्मेदारी है। उन्होंने शिक्षा संस्थाओं में पठन-पाठन और चिकित्सा संस्थाओं में उपलब्ध सुविधाओं की गुणवत्ता को लेकर किसी तरह की लापरवाही न बरतने के निर्देश दिए। कहा कि शोध और नवाचार समय की मांग है। शिक्षा परिषद की संस्थाओं इस पर निरंतर ध्यान देते रहने की जरूरत है। बैठक में शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो.यूपी सिंह, सदस्य प्रमथ नाथ मिश्र, डा.एसपी सिंह, रामजन्म सिंह, विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा.प्रदीप राव, डा.डीसी ठाकुर, डा.डीपी सिंह, डा.शशिप्रभा सिंह, डा.विजय चौधरी आदि मौजूद रहे।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के निरीक्षण के दौरान विश्वविद्यालय प्रबंधन के लोगों को निर्देश देते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के संस्था प्रमुखों की बैठक को संबोधित करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ • सौ. गोवि

लोगों को स्वावलंबी बनाने के लिए सामाजिक सरोकारों का बढ़ाएं दायरा

योगी ने शिक्षा परिषद की संस्थाओं के सामाजिक सहभाग की भी समीक्षा की। यह जाना कि सालभर में किस संस्था ने समाज के बीच जाकर किस तरह अपने सामाजिक सरोकारों को निभाया। उन्होंने कहा कि हर संस्था की जिम्मेदारी बनती है कि वह समाज की उन्नति के लिए, लोगों को स्वावलंबी बनाने के लिए अपने दायरे को बढ़ाए।

गोरखनाथ विश्वविद्यालय का किया निरीक्षण : मुख्यमंत्री योगी ने रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय परिसर का सघन निरीक्षण किया और अवस्थापना के साथ अन्य सुविधाओं को लेकर जरूरी दिशा निर्देश भी दिए। उन्होंने परिसर में बन रहे मेडिकल कालेज को गुणवत्तापूर्ण बनाने तथा भवन को भारतीय संस्कृति के प्रतिरूप में दर्शाने की सलाह दी।

शताब्दी वर्ष को लेकर अभी से करें तैयारी : मुख्यमंत्री योगी ने बैठक में सभी संस्था प्रमुखों को निर्देश दिया कि वह महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के शताब्दी वर्ष 2032 को भव्य और ऐतिहासिक बनाने के लिए अभी से तैयारी शुरू कर दें। कहा कि शताब्दी वर्ष तक हमें परिषद की संस्थाओं को एक प्रतिमान के रूप में स्थापित करना है। इसके लिए सभी संस्थाओं के प्रमुख को एक विस्तृत कार्ययोजना तैयार करके अभी से जुट जाना होगा।

एमपी इंटर कालेज में निर्माण कार्यों का लिया जायजा : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की समीक्षा बैठक करने से पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोलघर स्थित महाराणा प्रताप इंटर कालेज में नई बिल्डिंग के निर्माण कार्यों का भी जायजा लिया। अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त नया भवन चार तल का बन रहा है। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि निर्माण कार्यों में विरासत के संरक्षण तथा गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जाए।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने किया ड्रीम प्रोजेक्ट का निरीक्षण

चिड़ियाघर मुख्यमंत्री का ड्रीम प्रोजेक्ट है। इससे उन्हें बहुत लगाव है। जब भी उन्हें मौका मिलता है वह चिड़ियाघर पहुंचते हैं। रविवार को निरीक्षण के दौरान सीएम ने दर्शकों से मुलाकात भी की। इस दौरान देवरिया से आए दर्शकों के एक समूह ने उनसे कहा कि आपने चिड़ियाघर के रूप में पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोगों के लिए ज्ञान और मनोरंजन का एक बड़ा उपहार दिया है। हिप्पो के बाड़े के पास मौजूद समद अंसारी नामक बालक से सीएम ने हिप्पो के बारे में पूछा। जवाब मिलने पर सीएम ने बालक को चाकलेट देकर उसकी पीठ थपथपाई। इस दौरान महावीर डा.मंगलेश श्रीवास्तव, वन विभाग के एसडीओ डा.हरेंद्र सिंह, पशु चिकित्सक डा.रवि मौजूद रहे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति को शत प्रतिशत लागू कर रोल मॉडल बनें : सीएम

निष्पक्ष प्रतिदिन । गोरखपुर

मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की शैक्षिक व चिकित्सकीय समेत सभी संस्थाओं ने हमेशा अपने-अपने कार्यक्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करते हुए समाज और राष्ट्र के हित में अपनी उपयोगिता प्रमाणित की है। इस उत्कृष्टता को आगे बढ़ाते हुए, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा करते हुए सभी संस्थाएं परिसर संस्कृति को समृद्ध करने और निरंतर नवाचार पर ध्यान देने की तरफ अग्रसर हों। इस शिक्षा परिषद की संस्थाओं ने सामाजिक सहभाग को भी अपने ध्येय का हिस्सा बनाया है और इसे भविष्य में इसका दायरा और विस्तृत करने की आवश्यकता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति को अंगीकार करने में अग्रणी भूमिका निभाई है। अब जरूरत है कि हमारी संस्थाएं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों को शत प्रतिशत अपनाकर अन्य संस्थाओं के लिए रोल मॉडल बनें। सीएम योगी रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम गोरखपुर में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की सभी संस्थाओं की वार्षिक समीक्षा और भावी कार्ययोजना को लेकर बुलाई गई बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने एक-एक कर सभी संस्थाओं के प्रमुखों से उनकी सालभर की गतिविधियों और उपलब्धियों की जानकारी ली और आगामी कार्ययोजना को लेकर उनके लक्ष्यों पर अपने सुझाव दिए। संस्थाओं की तरफ से वार्षिक समीक्षा और भावी कार्ययोजना का प्रस्तुतिकरण पावर प्वाइंट (पीपीटी) डिस्प्ले के जरिये किया गया।

शताब्दी वर्ष को भव्य और ऐतिहासिक बनाने की अभी से शुरू करें तैयारी : समीक्षा और भावी कार्ययोजना को लेकर आहूत इस बैठक में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के शताब्दी वर्ष 2032 को भव्य और ऐतिहासिक बनाने के लिए अभी से तैयारी शुरू करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना 1932 में पूर्वी उत्तर प्रदेश में शैक्षिक पुनर्जागरण और राष्ट्रीय मूल्यों के संरक्षण को लेकर की गई थी। यह परिषद अपने संस्थापक युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज और विस्तारक राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज के मूल्यों, आदर्शों को संजोते हुए निरंतर प्रगतिमान है। आठ साल बाद यह अपनी यात्रा के शताब्दी वर्ष में होगी। शताब्दी वर्ष तक हमें परिषद की संस्थाओं को एक प्रतिमान के रूप में स्थापित करना है। इसके लिए सभी संस्थाओं के प्रमुख को एक विस्तृत कार्ययोजना तैयार करके अभी से जुट जाना होगा।

महायोगी गोरखनाथ विवि परिसर का सघन निरीक्षण किया सीएम योगी ने : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय परिसर का सघन निरीक्षण किया और अवस्थापना के साथ अन्य सुविधाओं को लेकर जरूरी दिशानिर्देश भी दिए। उन्होंने परिसर में बन रहे मेडिकल कॉलेज को गुणवत्तापूर्ण बनाने तथा भवन को भारतीय संस्कृति के प्रतिरूप में दर्शाने की बात कही। सीएम ने परिसर में आडिटोरियम, स्टेडियम, फार्मेसी कालेज आदि का भी सघन निरीक्षण किया। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की समीक्षा बैठक करने से पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोलघर स्थित महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज में नई बिल्डिंग के निर्माण कार्यों का भी जायजा लिया। अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त नया भवन चार तल का बन रहा है। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि निर्माण कार्यों में विरासत के संरक्षण तथा गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जाए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति को शत प्रतिशत लागू कर रोल मॉडल बनें: सीएम योगी

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की सभी संस्थाओं की वार्षिक समीक्षा कर भावी कार्ययोजना तय की गोरक्षपीठाधीश्वर ने

सत्य संगम संवाददाता

गोरखपुर। मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की शैक्षिक व चिकित्सकीय समेत सभी संस्थाओं ने हमेशा अपने-अपने कार्यक्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करते हुए समाज और राष्ट्र के हित में अपनी उपयोगिता प्रमाणित की है। इस उत्कृष्टता को आगे बढ़ाते हुए, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा करते हुए सभी संस्थाएं परिसर संस्कृति को समृद्ध करने और निरंतर नवाचार पर ध्यान देने की तरफ अग्रसर हों। इस शिक्षा परिषद की संस्थाओं ने सामाजिक सहभाग को भी अपने ध्येय का हिस्सा बनाया है और इसे भविष्य में इसका दायरा और विस्तृत करने की आवश्यकता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति को अंगीकार करने में अग्रणी भूमिका

निभाई है। अब जरूरत है कि हमारी संस्थाएं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों को शत प्रतिशत अपनाकर अन्य संस्थाओं के लिए रोल मॉडल बनें। सीएम योगी रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम गोरखपुर में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की सभी संस्थाओं की वार्षिक समीक्षा और भावी कार्ययोजना को लेकर बुलाई गई बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने एक-एक कर सभी संस्थाओं के प्रमुखों से उनकी सालभर की गतिविधियों और उपलब्धियों की जानकारी ली और आगामी कार्ययोजना को लेकर उनके

- परिसर संस्कृति को समृद्ध कर नवाचार पर रहे सतत ध्यान : सीएम योगी
- शिक्षा संस्थान विद्यार्थी केंद्रित और चिकित्सा संस्थान मरीज केंद्रित कार्य पद्धति को आगे बढ़ाएं
- हर संस्थान की उपादेयता तभी महत्वपूर्ण जब वह सामाजिक सहभाग में निरंतर सक्रिय रहे

लक्ष्यों पर अपने सुझाव दिए। संस्थाओं की तरफ से वार्षिक समीक्षा और भावी कार्ययोजना का प्रस्तुतिकरण पावर प्वाइंट (पीपीटी) डिस्प्ले के जरिये किया गया।

बैठक में मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं की गतिविधियों की सराहना की और भावी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अपनी शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद सिर्फ स्कूल, कॉलेज या अस्पताल खोलने वाली संस्था नहीं है। बल्कि इसका ध्येय शिक्षा, स्वास्थ्य व अन्य सेवाओं के माध्यम से समाज और राष्ट्र के सामाजिक विकास में योगदान देना है। इस परिषद की नींव ही इसी भावना के साथ राष्ट्रीयता की भावना का पोषण करने के लिए, राष्ट्र हित में सुयोग्य नागरिक तैयार करने के लिए रखी गई। परिस्थितियां अनुकूल रही हों, या प्रतिकूल, परिषद इस समग्र लक्ष्य से कभी भी विचलित नहीं हुई।

मुख्यमंत्री ने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं में अनुशासित परिसर संस्कृति को सदैव प्राथमिकता पर रखा है। परिषद की संस्थाओं ने इस मामले में अनुकरणीय प्रयास किया है। परिसर में अनुशासन की भावना के साथ, स्वच्छता, हरियाली और सबका सबके प्रति सद्भाव रहे, इसका नियमित पर्यवेक्षण करना सभी संस्थाध्यक्षों की जिम्मेदारी है। उन्होंने शिक्षा संस्थाओं में पठन-पाठन और चिकित्सा संस्थाओं में उपलब्ध सुविधाओं की गुणवत्ता में किसी भी तरह की कोताही न बरतने के निर्देश भी दिए। साथ ही कहा कि समय के साथ और चलने और आगामी समय से तालमेल बैठाने के लिए शोध और नवाचार आज की मांग है। शिक्षा परिषद की संस्थाओं ने शोध और नवाचार को लेकर जो प्रयास किए हैं, वे सराहनीय हैं। शोध और नवाचार को लेकर सतत ध्यान देते रहने की आवश्यकता है। इस अवसर पर उन्होंने शिक्षा परिषद की संस्थाओं को सामाजिक सहभाग की भी समीक्षा की। यह जाना कि सालभर में किस संस्था ने समाज के बीच जाकर किस तरह अपने सामाजिक सरोकारों को निभाया।

समाचार दर्पण

गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं की वार्षिक समीक्षा कर भावी कार्ययोजना तय की

शताब्दी वर्ष को भव्य बनाने की अभी से करें तैयारी

बोले सीएम

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। सीएम योगी रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की सभी संस्थाओं की वार्षिक समीक्षा और भावी कार्ययोजना को लेकर बैठक की। बैठक में मुख्यमंत्री योगी ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के शताब्दी वर्ष 2032 को भव्य और ऐतिहासिक बनाने के लिए अभी से तैयारी शुरू करने के निर्देश दिए।

उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना 1932 में पूर्वी उत्तर प्रदेश में शैक्षिक पुनर्जागरण और राष्ट्रीय मूल्यों के संरक्षण को लेकर की गई थी। यह परिषद अपने संस्थापक ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ और ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ के मूल्यों, आदर्शों को संजोते हुए निरंतर प्रतिमान है। आठ साल बाद यह अपनी यात्रा के शताब्दी वर्ष में होगा।

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि शताब्दी वर्ष तक हमें महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं को एक प्रतिमान के रूप में स्थापित करना है।

रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय का निरीक्षण करते सीएम योगी।

तीन खास बातें

1. **प्रतिमान:** म़प्र शिक्षा परिषद की संस्थाओं को एक प्रतिमान के रूप में करना है स्थापित
2. **प्रतिष्ठा:** पूर्वी यूपी में राष्ट्रीय मूल्यों के संरक्षण व शैक्षिक पुनर्जागरण को लेकर की गई थी स्थापना
3. **प्रमाणित:** संस्था ने उत्कृष्ट कार्य करते हुए समाज व राष्ट्रहित में प्रमाणित की है अपनी उपयोगिता

सीएम योगी ने किया परिसर का निरीक्षण

मुख्यमंत्री ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय परिसर का निरीक्षण किया। अवस्थापना के साथ अन्य सुविधाओं को लेकर जरूरी दिशानिर्देश भी दिए। उन्होंने परिसर में बन रहे मेडिकल कॉलेज को गुणवत्तापूर्ण बनाने व भवन को भारतीय संस्कृति के प्रतिरूप में दर्शाने की बात कही। सीएम ने परिसर में मौजूद आडिटोरियम, स्टेडियम, फार्मेसी कॉलेज का भी निरीक्षण किया।

बैठक में ये लोग रहे मौजूद

बैठक में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. यूपी सिंह, सदस्यगण प्रमथनाथ मिश्र, एसपी सिंह, रामजन्म सिंह, महायोगी गोरखनाथ विवि के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव, गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय के निदेशक ब्रिगेडियर डॉ. डीसी ठाकुर मौजूद, महंत दिग्विजयनाथ आयुर्वेद चिकित्सालय के अधीक्षक डॉ. डीपी सिंह, डीवीएन पीजी कॉलेज की कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. शशिप्रभा सिंह, डॉ. विजय कुमार चौधरी आदि रहे।

एमपी कॉलेज में निर्माण कार्यों का जायजा लिया

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की समीक्षा बैठक करने से पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोलघर स्थित महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज में नई बिल्डिंग के निर्माण कार्यों का जायजा लिया। अत्याधुनिक सुविधाओं से दुरुस्त नया भवन चार तल का बन रहा है। उन्होंने कहा कि निर्माण कार्यों में विरासत के संरक्षण तथा गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जाए।

रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में सीएम योगी आदित्यनाथ ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के पदाधिकारियों के साथ बैठक की। • हिन्दुस्तान

अमर और पटौदी को देखने चिड़ियाघर पहुंचे मुख्यमंत्री

निरीक्षण

गोरखपुर, कार्यालय संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को शहीद अशफाक उल्ला खां प्राणि उद्यान का भ्रमण एवं निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने चिड़ियाघर में करीब एक सप्ताह पूर्व इटावा लॉयन सफारी से लाए गए बब्बर शेर पांच साल के भरत और शेरनी सात साल की गौरी को भी देखा। योगी को देख रॉयल बंगाल टाइगर अमर ने एक पैर उठाकर दहाड़ मारी। इस पर सीएम हंस पड़े। मुख्यमंत्री बाघिन मैलानी और सफेद बाघिन गीता के अलावा बब्बर शेर पटौदी और तेंदुओं चंडी एवं भवानी के बाड़े के पास भी गए।

चिड़ियाघर का निरीक्षण करने के दौरान मुख्यमंत्री ने गैंडों की जोड़ी हरि और गौरी को केला खिलाया। इसके अलावा मुख्यमंत्री ने हिरण, बंदर, जैकाल, हिप्पो, भालू आदि के बाड़े भी देखे। इस दौरान वह साथ चल रहे डीएफओ और चिड़ियाघर के निदेशक विकास यादव से वन्यजीवों की देखभाल के बारे में जानकारी लेते रहे। उन्होंने चिड़ियाघर के अस्पताल का भी निरीक्षण किया और वन्यजीवों के रेस्क्यू करने के तरीके और उनके इलाज तथा खानपान के बारे में जानकारी ली। गोरखपुर चिड़ियाघर के अधिकारियों को वन्यजीवों की समुचित देखभाल के निर्देश दिए।

आम लोगों से मिले, बच्चों को दिया चॉकलेट

भ्रमण के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने चिड़ियाघर पहुंचे दर्शकों से भी मुलाकात की। देवरिया से आए दर्शकों के एक समूह ने उनसे कहा कि आपने चिड़ियाघर के रूप में पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोगों के लिए ज्ञान और मनोरंजन की एक बड़ी सौगात दी है। सीएम योगी ने वहां मौजूद बच्चों को दुलारा और चॉकलेट के साथ आशीर्वाद दिया। हिप्पो के बाड़े के पास मौजूद समद अंसारी नामक बालक सीएम के हाथों चॉकलेट पाते ही खुशी से उछल पड़ा।

गुरु दर्शन, गोसेवा और बालप्रेम में रमे रहे योगी

गोरखपुर, निज संवाददाता। लोकसभा चुनाव की दो महीने की व्यस्तता के बाद रविवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की दिनचर्या परंपरागत रही। गोरखनाथ मंदिर में उन्होंने बाबा गोरखनाथ के दर्शन-पूजन कर लोकमंगल की कामना की। गोसेवा की। इस दौरान रिमझिम बारिश के बीच मुख्यमंत्री बालप्रेम में भी रमे दिखे।

लोकसभा चुनाव के अंतिम चरण का मतदान समाप्त होने के अगले दिन रविवार को जहां कई राजनेता चुनावी गणित समझने में उलझे रहे वहीं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की दिनचर्या आम दिनों की तरह रही। गोरखनाथ मंदिर में गुरु गोरक्षनाथ के दर्शन-पूजन के साथ फिर अपने ब्रह्मलीन गुरुदेव महंत अवेद्यनाथ की समाधि पर मत्था टेका और उनका आशीर्वाद लिया। सुबह की रिमझिम बारिश के बीच मंदिर परिसर के भ्रमण के दौरान श्रद्धालुओं के साथ आए बच्चों से मिले। मुख्यमंत्री ने बच्चों को अपने पास बुला लिया। उनसे पढ़ाई-लिखाई के बारे में पूछा और सबके सिर पर हाथ फेरकर प्यार-दुलार किया।

गोरखनाथ मन्दिर के गौशाला में गाय को गुड़ खिलाते सीएम योगी आदित्यनाथ।

शताब्दी वर्ष को भव्य बनाने की अभी से शुरू करें तैयारी

गोरखपुर। सीएम योगी आदित्यनाथ ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के शताब्दी वर्ष 2032 को भव्य और ऐतिहासिक बनाने के लिए अभी से तैयारी शुरू करने के निर्देश दिए।

रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की सभी संस्थाओं की वार्षिक समीक्षा और भावी कार्ययोजना को लेकर बुलाई गई बैठक में उन्होंने कहा कि शताब्दी वर्ष तक हमें परिषद की संस्थाओं को एक प्रतिमान के रूप में स्थापित करना है। इसके लिए सभी संस्थाओं के प्रमुख को अभी से जुट जाना होगा।

परिसर का निरीक्षण

मुख्यमंत्री ने रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय का निरीक्षण किया व अवस्थापना के साथ अन्य सुविधाओं को लेकर दिशानिर्देश भी दिए। उन्होंने परिसर में बन रहे मेडिकल कॉलेज को गुणवत्तापूर्ण बनाने और भवन को भारतीय संस्कृति के प्रतिरूप में दर्शाने की बात कही।

निर्माण कार्यों का जायजा लिया : बैठक करने से पहले मुख्यमंत्री ने गोलघर स्थित महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज में नई बिल्डिंग के निर्माण कार्यों का भी जायजा लिया। संवाद

राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू कर रोल मॉडल बनें : योगी

गोरखपुर (एसएनबी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की शैक्षिक व चिकित्सकीय समेत सभी संस्थाओं ने हमेशा अपने-अपने कार्यक्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करते हुए समाज और राष्ट्र के हित में अपनी उपयोगिता प्रमाणित की है। इस उत्कृष्टता को आगे बढ़ाते हुए, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा करते हुए सभी संस्थाएं परिसर संस्कृति को समृद्ध करने और निरंतर नवाचार पर ध्यान देने की तरफ अग्रसर हों। इस शिक्षा परिषद की संस्थाओं ने सामाजिक सहभाग को भी अपने ध्येय का हिस्सा बनाया है और इसे भविष्य में इसका दायरा और विस्तृत करने की आवश्यकता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति को अंगीकार करने में अग्रणी भूमिका निभाई है। अब जरूरत है कि हमारी संस्थाएं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों को शत प्रतिशत अपनाकर अन्य संस्थाओं के लिए रोल मॉडल बनें।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की सभी संस्थाओं की वार्षिक समीक्षा कर भावी कार्ययोजना तय की गोरक्षपीठाधीश्वर ने

■ परिसर संस्कृति को समृद्ध कर नवाचार शिक्षा संस्थान विद्यार्थी केंद्रित और चिकित्सा संस्थान मरीज केंद्रित कार्य पद्धति को आगे बढ़ाएं

सीएम रविवार को महायोगी गोरखनाथ विवि, आरोग्यधाम गोरखपुर में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की सभी संस्थाओं की वार्षिक समीक्षा और भावी कार्ययोजना को लेकर बुलाई गई बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने एक-एक कर सभी संस्थाओं के प्रमुखों से उनकी सालभर की गतिविधियों और उपलब्धियों की जानकारी ली और आगामी कार्ययोजना को लेकर उनके लक्ष्यों पर अपने सुझाव दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद सिर्फ स्कूल, कालेज या अस्पताल खोलने वाली संस्था नहीं है बल्कि इसका ध्येय शिक्षा, स्वास्थ्य व अन्य सेवाओं के माध्यम से समाज और राष्ट्र के सामाजिक विकास में योगदान देना है। मुख्यमंत्री ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के शताब्दी वर्ष 2032 को भव्य और ऐतिहासिक बनाने के लिए अभी से तैयारी शुरू करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना 1932 में पूर्वी उत्तर प्रदेश में शैक्षिक पुनर्जागरण और राष्ट्रीय मूल्यों के संरक्षण को लेकर की गई थी। यह परिषद अपने संस्थापक युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ और विस्तारक ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ के मूल्यों, आदर्शों को संजोते हुए निरंतर प्रतिमान है। आठ साल बाद यह अपनी यात्रा के शताब्दी वर्ष में होगी। शताब्दी वर्ष तक हमें परिषद की संस्थाओं को एक प्रतिमान के रूप में स्थापित करना है। इसके लिए सभी संस्थाओं के प्रमुख को एक विस्तृत कार्ययोजना तैयार करके अभी से जुट जाना होगा। बैठक में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. यूपी सिंह, सदस्यगण प्रमथनाथ मिश्र, एसपी सिंह, रामजन्म सिंह, डा. प्रदीप कुमार राव, ब्रिगेडियर डा. डीसी ठाकुर, डा. डीपी सिंह, डा. शशिप्रभा सिंह आदि मौजूद रहे।

गोरखनाथ विश्वविद्यालय का निरीक्षण करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ।

महायोगी गोरखनाथ विवि परिसर का योगी ने किया निरीक्षण : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को महायोगी गोरखनाथ विवि परिसर का सघन निरीक्षण किया और अवस्थापना के साथ अन्य सुविधाओं को लेकर जरूरी दिशानिर्देश भी दिए। उन्होंने परिसर में बन रहे मेडिकल कालेज को गुणवत्तापूर्ण बनाने तथा भवन को भारतीय संस्कृति के प्रतिरूप में दर्शाने की बात कही। सीएम ने परिसर में आडिटोरियम, स्टेडियम, फार्मेसी कालेज आदि का भी सघन निरीक्षण किया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति को शत-प्रतिशत लागू कर रोल मॉडल बनें: योगी

गोरखपुर। (स्पष्ट आवाज)। मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की शैक्षिक व चिकित्सकीय समेत सभी संस्थाओं ने हमेशा अपने-अपने कार्यक्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करते हुए समाज और राष्ट्र के हित में अपनी उपयोगिता प्रमाणित की है। इस उत्कृष्टता को आगे बढ़ाते हुए, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा करते हुए सभी संस्थाएं परिसर संस्कृति को समृद्ध करने व निरंतर नवाचार पर ध्यान देने की तरफ अग्रसर हों। इस शिक्षा परिषद की संस्थाओं ने सामाजिक सहभाग को भी अपने ध्येय का हिस्सा बनाया है और इसे भविष्य में इसका दायरा और विस्तृत करने की आवश्यकता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति को अंगीकार करने में अग्रणी भूमिका निभाई है। इस अवसर पर उन्होंने शिक्षा परिषद की संस्थाओं की सामाजिक सहभाग की भी समीक्षा की। यह जाना कि सालभर में किस संस्था ने समाज के बीच जाकर किस तरह अपने सामाजिक सरोकारों को निभाया। उन्होंने कहा कि हर संस्था की जिम्मेदारी बनती है कि वह समाज की उन्नति के लिए, लोगों को स्वावलंबी बनाने के लिए अपने दायरे को बढ़ाए। सीएम ने इस बात पर प्रसन्नता जताई कि परिषद की संस्थाओं ने लगातार अलग-अलग आयामों से जुड़कर समाज की चिकित्सा, शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण और स्वावलंबन के लिए अनवरत कार्यों की श्रृंखला को बनाए रखा है। बैठक के दौरान मुख्यमंत्री ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं की कार्यपद्धति पर भी विमर्श किया। सभी संस्थाओं की कार्यपद्धति की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि उत्कृष्टता में भी परिमार्जन की गुंजाइश हमेशा रहती है। सीएम ने कहा कि शिक्षा से जुड़ी संस्थाएं विद्यार्थी केंद्रित और चिकित्सा सेवा से जुड़ी संस्थाएं मरीज केंद्रित कार्य प्रणाली का निरंतर उन्नयन करती रहें। जो भी कार्य हों, उनमें सेवा की भावना सर्वोपरि होनी चाहिए।

कार्रवाई

- परिसर संस्कृति को समृद्ध कर नवाचार पर रहे सतत ध्यान : सीएम
- परिसर संस्कृति को समृद्ध कर नवाचार पर रहे सतत ध्यान : सीएम

शताब्दी वर्ष को भव्य और ऐतिहासिक बनाने की अभी से शुरू करें तैयारी : योगी

समीक्षा और भावी कार्ययोजना को लेकर आहूत इस बैठक में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के शताब्दी वर्ष 2032 को भव्य और ऐतिहासिक बनाने के लिए अभी से तैयारी शुरू करने के निर्देश दिए।

महायोगी गोरखनाथ विवि परिसर का सघन निरीक्षण किया सीएम योगी ने

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय परिसर का सघन निरीक्षण किया और अवस्थापना के साथ अन्य सुविधाओं को लेकर जरूरी दिशानिर्देश भी दिए।

समाचार दर्पण

पौधरोपण कर मनाया गया विश्व पर्यावरण दिवस

लोक भारती न्यूज ब्यूरो

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस परिसर में पौधरोपण कर मनाया गया। गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग की प्राचार्या डॉ. डीएस अजीथा एवं महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. राजेश बहल ने विश्वविद्यालय परिसर में स्थित नंदन वन में फलदार पौधे लगाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

इस अवसर पर नर्सिंग संकाय की प्राचार्या डॉ. अजीथा ने कहा कि आज पूरा विश्व पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं से जूझ रहा है। पर्यावरण संतुलन और प्रकृति के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए यह जरूरी है कि हम अधिक से अधिक पौधे लगाएं। महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. राजेश बहल ने कहा कि पौधों का जीवन हमारे पर्यावरण के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। पौधरोपण और वृक्षों का संरक्षण समय की मांग है। राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दुबे ने भी विचार व्यक्त किए। पौधरोपण अभियान में विश्वविद्यालय के उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकान्त, कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे, प्रज्ञा पाण्डेय, डॉ. अमित दुबे, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. अंकिता मिश्रा, डॉ. गौरीश नारायण, डॉ. संध्या पाठक, डॉ. प्रिया एस. आर. नायर, डॉ. देवी आर. नायर, डॉ. रश्मि पुष्पम, डॉ. एस. यश्मीन, डॉ. नवीन के., डॉ. विनम्र शर्मा, डॉ. गोपी कृष्णा, डॉ. परिक्षित देवनाथ, डॉ. विकास यादव, सृष्टि यदुवंशी, धनन्जय पाण्डेय, डॉ. संदीप श्रीवास्तव आदि की सहभागिता रही।

पेड़ धरती पर जीवन के लिए जरूरी: डॉ. राजेश

स्वतंत्र भारत संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस परिसर में पौधरोपण कर मनाया गया। गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग की प्राचार्या डॉ. डीएस अजीथा एवं महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. राजेश बहल ने विश्वविद्यालय परिसर में स्थित नंदन वन में फलदार पौधे लगाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

इस अवसर पर नर्सिंग संकाय की प्राचार्या डॉ. अजीथा ने कहा कि आज पूरा विश्व पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं से जूझ रहा है। पर्यावरण संतुलन और प्रकृति के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए यह जरूरी है कि हम अधिक से अधिक पौधे लगाएं। महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. राजेश बहल ने कहा कि पौधों का जीवन हमारे पर्यावरण के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। पौधरोपण और वृक्षों का संरक्षण समय की मांग है। राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दुबे ने भी विचार व्यक्त किए। पौधरोपण अभियान में विश्वविद्यालय के उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकान्त, कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे, प्रज्ञा पाण्डेय, डॉ. अमित दुबे, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. अंकिता मिश्रा, डॉ. गौरीश नारायण, डॉ. संध्या पाठक, डॉ. प्रिया एस. आर. नायर, डॉ. देवी आर. नायर, डॉ. रश्मि पुष्पम, डॉ. एस. यश्मीन, डॉ. नवीन के., डॉ. विनम्र शर्मा, डॉ. विकास यादव, सृष्टि यदुवंशी, धनन्जय पाण्डेय, डॉ. संदीप श्रीवास्तव आदि की सहभागिता रही।

महायोगी गोरखनाथ विवि में पौधरोपण कर मनाया गया विश्व पर्यावरण दिवस

संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस परिसर में पौध ारोपण कर मनाया गया। गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग की प्राचार्या डॉ. डीएस अजीथा एवं महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. राजेश बहल ने विश्वविद्यालय परिसर में स्थित नंदन वन में फलदार पौधे लगाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर नर्सिंग संकाय की प्राचार्या डॉ. अजीथा ने कहा कि आज पूरा विश्व पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं से जूझ रहा है। पर्यावरण संतुलन और प्रकृति के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए यह जरूरी है कि हम अधिक से अधिक पौधे लगाएं। महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक डॉ. राजेश बहल ने कहा कि पौधों का जीवन हमारे पर्यावरण के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। पौधरोपण और वृक्षों का संरक्षण समय की मांग है। राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दुबे ने भी विचार व्यक्त किए।

पौधरोपण अभियान में विश्वविद्यालय के उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकान्त, कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे, प्रज्ञा पाण्डेय, डॉ. अमित दुबे, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. अंकिता मिश्रा, डॉ. गौरीश नारायण, डॉ. संध्या पाठक, डॉ. प्रिया एस. आर. नायर, डॉ. देवी आर. नायर, डॉ. रश्मि पुष्पम, डॉ. एस. यश्मीन, डॉ. नवीन के., डॉ. विनम्र शर्मा, डॉ. गोपी कृष्णा, डॉ. परिक्षित देवनाथ, डॉ. विकास यादव, सृष्टि यदुवंशी, धनन्जय पाण्डेय, डॉ. संदीप श्रीवास्तव आदि की सहभागिता रही।

समाचार दर्पण

महयोगी गोरखनाथ विवि के डी. फार्मा के विद्यार्थियों ने किया औद्योगिक भ्रमण

संवाददाता

गोरखपुर, 11 जून। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के फार्मास्युटिकल विज्ञान संकाय में अध्ययनरत डी. फार्मा प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों ने गीडा औद्योगिक क्षेत्र स्थित बर्नेट फार्मास्युटिकल प्राइवेट लिमिटेड का औद्योगिक भ्रमण कर व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में फार्मास्युटिकल विज्ञान संकाय के प्रधानाचार्य डॉ. शशिकांत सिंह ने बताया कि यह भ्रमण विद्यार्थियों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान करने तथा फार्मास्युटिकल उद्योग की गहन समझ प्रदान करने की विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता का हिस्सा है। औद्योगिक भ्रमण में डी. फार्मा. प्रथम वर्ष के सभी छात्र शामिल हुए, जिनका बर्नेट फार्मास्युटिकल की टीम द्वारा स्वागत किया गया। छात्रों को अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं, गुणवत्ता नियंत्रण इकाइयों तथा उत्पादन लाइनों सहित अत्याधुनिक विनिर्माण सुविधाओं का भ्रमण करने का अवसर मिला। इस भ्रमण के दौरान छात्रों को कंपनी के संचालन का व्यापक अवलोकन कराया गया। उन्होंने प्रारंभिक अनुसंधान तथा पैकेजिंग तक संपूर्ण औषधि विकास प्रक्रिया देखी। इस भ्रमण का एक मुख्य आकर्षण फार्मास्युटिकल उत्पादों की सुरक्षा और प्रभावकारिता सुनिश्चित करने के लिए लागू किए गए कड़े गुणवत्ता नियंत्रण उपायों पर एक विस्तृत प्रस्तुति थी। छात्रों ने विनियामक मानकों के अनुपालन की महत्वपूर्ण भूमिका, अच्छे विनिर्माण अभ्यास (जीएमपी) के महत्व और इन मानकों को बनाए रखने में उद्योग के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में सीखा। औद्योगिक भ्रमण के लिए फार्मास्युटिकल विज्ञान संकाय के प्रधानाचार्य डॉ. शशिकांत सिंह ने बर्नेट फार्मास्युटिकल के प्रबंधक सुशील कुमार के प्रति आभार व्यक्त किया। डॉ. सिंह ने कहा कि भविष्य में इस तरह के और भ्रमण आयोजित करने, व्यावहारिक शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देने और छात्रों को फार्मास्युटिकल उद्योग में सफल करियर के लिए तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध है।

डी. फार्मा के विद्यार्थियों ने दवा निर्माण की प्रक्रिया को समझा

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के फार्मास्युटिकल विज्ञान संकाय में अध्ययनरत डी. फार्मा प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों ने गीडा औद्योगिक क्षेत्र स्थित बर्नेट फार्मास्युटिकल प्राइवेट लिमिटेड का औद्योगिक भ्रमण कर व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया। छात्रों को कंपनी के संचालन, प्रारंभिक अनुसंधान तथा पैकेजिंग तक संपूर्ण औषधि विकास की प्रक्रिया देखी।

फार्मास्युटिकल विज्ञान संकाय के प्रधानाचार्य डॉ. शशिकांत सिंह ने बताया कि भ्रमण में डी. फार्मा प्रथम वर्ष के छात्र शामिल हुए। छात्रों को अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं, गुणवत्ता नियंत्रण इकाइयों तथा अत्याधुनिक विनिर्माण सुविधाओं का भ्रमण करने का अवसर मिला। संवाद

महायोगी विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो और भारतीय बीज विज्ञान संस्थान के साथ समझौता किया। स्रोत - संस्था

महायोगी गोरखनाथ विवि और भारतीय बीज विज्ञान संस्थान करेंगे कृषि पर शोध

गोरखपुर। कृषि क्षेत्र में अनुसंधान व शैक्षणिक कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करने के लिए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने दो एमओयू किए हैं।

राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो और भारतीय बीज विज्ञान संस्थान के साथ यह समझौता (एमओयू) किया गया है। दोनों की संस्थान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतर्गत संचालित होते हैं।

इस समझौते से शिक्षक व छात्र कृषि में सूक्ष्म जीवों की उपयोगिता, उनके अधिग्रहण और प्रबंधन में सहयोग व कृषि के सतत विकास के लिए संबंधित अनुसंधान आदि पर शोध कार्य कर सकेंगे। विश्वविद्यालय की तरफ से एमओयू पर कुलसचिव डॉ. प्रदीप राव ने हस्ताक्षरित किया। ब्यूरो

महयोगी गोरखनाथ विवि के डी. फार्मा के विद्यार्थियों ने किया औद्योगिक भ्रमण

संवाददाता

गोरखपुर, 11 जून। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के फार्मास्युटिकल विज्ञान संकाय में अध्ययनरत डी. फार्मा प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों ने गीडा औद्योगिक क्षेत्र स्थित बर्नेट फार्मास्युटिकल प्राइवेट लिमिटेड का औद्योगिक भ्रमण कर व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में फार्मास्युटिकल विज्ञान संकाय के प्रधानाचार्य डॉ. शशिकांत सिंह ने बताया कि यह भ्रमण विद्यार्थियों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान करने तथा फार्मास्युटिकल उद्योग की गहन समझ प्रदान करने की विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता का हिस्सा है। औद्योगिक भ्रमण में डी. फार्मा. प्रथम वर्ष के सभी छात्र शामिल हुए, जिनका बर्नेट फार्मास्युटिकल की टीम द्वारा स्वागत किया गया। छात्रों को अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं, गुणवत्ता नियंत्रण इकाइयों तथा उत्पादन लाइनों सहित अत्याधुनिक विनिर्माण सुविधाओं का भ्रमण करने का अवसर मिला। इस भ्रमण के दौरान छात्रों को कंपनी के संचालन का व्यापक अवलोकन कराया गया। उन्होंने प्रारंभिक अनुसंधान तथा पैकेजिंग तक संपूर्ण औषधि विकास प्रक्रिया देखी। इस भ्रमण का एक मुख्य आकर्षण फार्मास्युटिकल उत्पादों की सुरक्षा और प्रभावकारिता सुनिश्चित करने के लिए लागू किए गए कड़े गुणवत्ता नियंत्रण उपायों पर एक विस्तृत प्रस्तुति थी। छात्रों ने विनियामक मानकों के अनुपालन की महत्वपूर्ण भूमिका, अच्छे विनिर्माण अभ्यास (जीएमपी) के महत्व और इन मानकों को बनाए रखने में उद्योग के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में सीखा। औद्योगिक भ्रमण के लिए फार्मास्युटिकल विज्ञान संकाय के प्रधानाचार्य डॉ. शशिकांत सिंह ने बर्नेट फार्मास्युटिकल के प्रबंधक सुशील कुमार के प्रति आभार व्यक्त किया। डॉ. सिंह ने कहा कि भविष्य में इस तरह के और भ्रमण आयोजित करने, व्यावहारिक शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देने और छात्रों को फार्मास्युटिकल उद्योग में सफल करियर के लिए तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध है।

महायोगी गोरखनाथ विवि ने राष्ट्रीय महत्व के दो संस्थानों के साथ किया एमओयू

राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो और भारतीय बीज विज्ञान संस्थान के साथ मिलकर कृषि क्षेत्र में अनुसंधान को बढ़ावा देगा विवि

संवाददाता

गोरखपुर, 11 जून। कृषि क्षेत्र में अनुसंधान व शैक्षणिक कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करने के लिए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतर्गत संचालित दो प्रमुख संस्थानो राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो और भारतीय बीज विज्ञान संस्थान के साथ समझौता करार (एमओयू) किया है।

विश्वविद्यालय की तरफ से इन एमओयू को कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने हस्ताक्षरित किया जबकि राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो मऊ के तरफ से निदेशक डॉ. आलोक कुमार श्रीवास्तव तथा भारतीय बीज विज्ञान संस्थान की तरफ से निदेशक डॉ. संजय कुमार ने हस्ताक्षर किए। एमओयू के तहत सहयोग के प्रमुख क्षेत्रों में कृषि आधारित अनुसंधान, विशेषकर कृषि में सूक्ष्म जीवों की उपयोगिता, उनके अधिग्रहण और प्रबंधन में सहयोग व कृषि के सतत विकास के लिए संबंधित अनुसंधान और कौशल बढ़ाने के लिए क्षमता विकास और विनिमय कार्यक्रम शामिल हैं।

भारतीय बीज विज्ञान संस्थान से हुए एमओयू का मुख्य उद्देश्य गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय आवश्यकता के अनुरूप गुणवत्तायुक्त बीजों के उत्पादन एवं आपूर्ति से अवगत कराना, बीज प्रमाणीकरण, परीक्षण, रोग मुक्त बीज उत्पादन की विधियों से परिचित कराने के साथ–साथ बीजों के सुरक्षित भंडारण के क्षेत्र में विशेषज्ञता को बढ़ावा देना है। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने दोनों एमओयू का स्वागत करते हुए इसे कृषि शिक्षा के प्रचार–प्रसार व अनुसंधान के क्षेत्र में साझा उद्देश्यों के प्रति मील का पत्थर बताया।

राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो के निदेशक डॉ. आलोक कुमार श्रीवास्तव व भारतीय बीज विज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ. संजय कुमार ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के साथ हुए समझौता करार पर हर्ष व्यक्त करते हुए संयुक्त रूप से कहा कि इसका मुख्य उद्देश्य कृषि क्षेत्र में विकास, नवाचार को प्रोत्साहित करना एवं किसानों के जीवनयापन में सतत सुधार है। इस समझौते से ''लैब टू लैण्ड'' की परिकल्पना चरितार्थ होगी। एमओयू के अवसर पर उप महानिदेशक कृषि (फसल विज्ञान प्रभाग) डॉ. तिलक राज शर्मा, उप महानिदेशक कृषि (प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन संस्थान) डॉ. सुरेश कुमार चौधरी, महायोगी गोरखनाथ विवि में कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दूबे, सहायक आचार्य डॉ. प्रवीन कुमार सिंह, वैज्ञानिक डॉ. हिलोल चक्दर व डॉ. कुलदीप जायसवाल उपस्थित रहे।

अनुबंध से कृषि क्षेत्र में अनुसंधान को बढ़ावा देगा गोरखनाथ विश्वविद्यालय

अनुबंध पत्र दिखाते महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो और भारतीय बीज विज्ञान संस्थान के पदाधिकारी● सौ. गोरखनाथ विश्वविद्यालय

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : कृषि क्षेत्र में अनुसंधान व शैक्षणिक कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करने के लिए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतर्गत संचालित दो प्रमुख संस्थानो राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो और भारतीय बीज विज्ञान संस्थान के साथ अनुबंध किया है। मंगलवार को विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव, राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्म जीव ब्यूरो मऊ की ओर से निदेशक डा. आलोक कुमार श्रीवास्तव और भारतीय बीज विज्ञान संस्थान की तरफ से निदेशक डा. संजय कुमार ने अनुबंध पत्र पर हस्ताक्षर किए। अनुबंध की शर्तों में कृषि आधारित अनुसंधान, कृषि में सूक्ष्म जीवों की उपयोगिता, सतत कृषि विकास और कृषि क्षेत्र में कौशल विकास में सहयोग शामिल हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डा. अतुल वाजपेयी ने अनुबंध का स्वागत किया। डा. आलोक, डा. संजय कुमार, उप महानिदेशक कृषि (फसल विज्ञान प्रभाग) डा. तिलक राज शर्मा, उप महानिदेशक कृषि डा. सुरेश कुमार चौधरी, कृषि संकाय के अधिष्ठाता डा. विमल कुमार दुबे आदि मौजूद रहे।

महायोगी गोरखनाथ विवि ने राष्ट्रीय महत्व के दो संस्थानों के साथ किया एमओयू

राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो और भारतीय बीज विज्ञान संस्थान के साथ मिलकर कृषि क्षेत्र में अनुसंधान को बढ़ावा देगा विवि

(रवि प्रकाश गुप्ता)

गोरखपुर। कृषि क्षेत्र में अनुसंधान व शैक्षणिक कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करने के लिए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतर्गत संचालित दो प्रमुख संस्थानो राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो और भारतीय बीज विज्ञान संस्थान के साथ समझौता करार (एमओयू) किया है। विश्वविद्यालय की तरफ से इन एमओयू को कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने हस्ताक्षरित किया जबकि राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो मऊ के तरफ से निदेशक डॉ. आलोक कुमार श्रीवास्तव तथा भारतीय बीज विज्ञान संस्थान की तरफ से निदेशक डॉ. संजय कुमार ने हस्ताक्षर किए। एमओयू के तहत सहयोग के प्रमुख क्षेत्रों में कृषि आधारित अनुसंधान, विशेषकर कृषि में सूक्ष्म जीवों की उपयोगिता, उनके अधिग्रहण और प्रबंधन में सहयोग व कृषि के सतत विकास के लिए संबंधित अनुसंधान और कौशल बढ़ाने के लिए क्षमता विकास और विनिमय कार्यक्रम शामिल हैं। भारतीय बीज विज्ञान संस्थान से हुए एमओयू का मुख्य उद्देश्य गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय आवश्यकता के अनुरूप गुणवत्तायुक्त बीजों के उत्पादन एवं आपूर्ति से अवगत कराना, बीज प्रमाणीकरण, परीक्षण, रोग मुक्त बीज उत्पादन की विधियों से परिचित कराने के साथ-साथ बीजों के सुरक्षित भंडारण के क्षेत्र में विशेषज्ञता को बढ़ावा देना है। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने दोनों एमओयू का स्वागत करते हुए इसे कृषि शिक्षा के प्रचार-प्रसार व अनुसंधान के क्षेत्र में साझा उद्देश्यों के प्रति मील का पत्थर बताया। राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो के निदेशक डॉ. आलोक कुमार श्रीवास्तव व भारतीय बीज विज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ. संजय कुमार ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के साथ हुए समझौता करार पर हर्ष व्यक्त करते हुए संयुक्त रूप से कहा कि इसका मुख्य उद्देश्य कृषि क्षेत्र में विकास, नवाचार को प्रोत्साहित करना एवं किसानों के जीवनयापन में सतत सुधार है। इस समझौते से ह्नलैब टू लैण्डह्न की परिकल्पना चरितार्थ होगी। एमओयू के अवसर पर उप महानिदेशक कृषि (फसल विज्ञान प्रभाग) डॉ. तिलक राज शर्मा, उप महानिदेशक कृषि (प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन संस्थान) डॉ. सुरेश कुमार चौधरी, महायोगी गोरखनाथ विवि में कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दूबे, सहायक आचार्य डॉ. प्रवीन कुमार सिंह, वैज्ञानिक डॉ. हिलोल चक्दर व डॉ. कुलदीप जायसवाल उपस्थित रहे।

समाचार दर्पण

गोरखनाथ विवि में मनाया योग दिवस

गोरखपुर, कार्यालय संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर योग के विभिन्न आसनों व प्राणायाम का अभ्यास कराया गया।

योगाभ्यास कार्यक्रम का शुभारंभ विवि के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी, महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय के निदेशक कर्नल डॉ. राजेश बहल, आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. मंजूनाथ एनएस ने दीप जलाकर किया। इसके बाद डॉ. मंजूनाथ एनएस और योग प्रशिक्षक चन्द्रजीत यादव ने सभी को विभिन्न प्रकार के योग का अभ्यास कराया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दूबे, फार्मेसी संकाय के अध्यक्ष प्रो. शशिकांत सिंह, उप कुलसचिव (प्रशासन) श्रीकांत, डॉ. विकास यादव, डॉ. कीर्ति यादव आदि मौजूद रहे।

महायोगी गोरखनाथ विवि में योग करते कुलपति, शिक्षक व छात्र-छात्राएं।

आरोग्य मंदिर में 800 से अधिक लोगों ने किया योग : प्राकृतिक चिकित्सा के केंद्र आरोग्य मंदिर में योग शिक्षक डॉ. पीयूष पाणी पांडेय ने 800 से अधिक लोगों को योग कराया। आरोग्य मंदिर के निदेशक डॉ. विमल कुमार मोदी ने कहा कि योग हमारी प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार है। पूर्व मेयर डॉ. सत्या पांडेय सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

'Nath sect seers always work for public welfare'

Shalabh@timesgroup.com

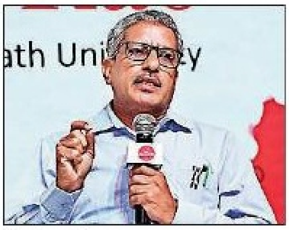
Pradeep Rao

Gorakhpur: Any mention of Gorakhpur is incomplete without sharing its strong connection with the Nath sect.

In an insightful session, Mahayogi Gorakhnath University registrar, Pradeep Rao, spoke on the importance and significance of the Nath sect for the city.

Among the pioneers of social reform in the country, Nath sect founder Gorakhnath devoted his entire life to asceticism and initiated the strong guru-disciple legacy, said Rao. Rao said Gorakhpur has been named after the Mahayogi as it was his taposthali (place of worship where he gained enlightenment).

He said Nath sect can be broadly divided into two disciplines — one meant for yogis who renounce worldly ties, and second for the common people. "Gorakhnath teaches us five things – good conduct, complete deduction to achieve goals, hard work, simple living and lifestyle and public welfare," said Rao.

Chief Minister Yogi Adityanath is carrying forward the legacy of his gurus as the chief of the Gorakhnath Peeth. Rao said Gorakhpur was battered in the past and its name was changed under the Mughal rule. "British started calling the city as Gorakhpur again and that is how the title after the mahayogi was restored," he said. Emphasising that the head of the Gorakhnath peeth has the duty to keep working in the interest of the public and get their issues resolved, Rao added that yogis of the Nath sect work for the people without any discrimination.

"Irrespective of colour, caste, creed, religion, social or economic background, the moral duty of a Nath sect yogi is to protect the people," said Rao.

गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग में कार्यशाला का आयोजन

संवाददाता

गोरखपुर। गुरु श्री गोरक्षनाथ कालेज ऑफ नर्सिंग में शिक्षा ग्रहण वर्कशॉप आयोजित किया गया जिसमें गोरखपुर क्षेत्र में स्थित चंद्रमौली नर्सिंग कॉलेज, सावित्री नर्सिंग कॉलेज एवं संकर नर्सिंग कॉलेज के शिक्षक शामिल हुए। वर्कशॉप में मिशन निरामया और नर्सिंग केयर पर विशेष और विस्तार से जानकारी दी गई। वर्कशॉप में नर्सिंग ट्यूटर रिंकी सिंह ने नर्सिंग कॉलेज में प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षण वातावरण, कक्षा व्यवस्था, उत्तेजना क्षेत्र और नैदानिक क्षेत्र की तैयारी के बारे में चर्चा की। असिस्टेंट प्रोफेसर ईश्वरी के. ने इंटरएक्टिव प्रेजेंटेशन, असिस्टेंट प्रोफेसर ममता रावत ने ज्ञान मूल्यांकन के बारे में बताया। वर्कशॉप में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी एवं कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव का मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ।

गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग में कार्यशाला का आयोजन

संवाददाता

गोरखपुर। गुरु श्री गोरक्षनाथ कालेज ऑफ नर्सिंग में शिक्षा ग्रहण वर्कशॉप आयोजित किया गया जिसमें गोरखपुर क्षेत्र में स्थित

चंद्रमौली नर्सिंग कॉलेज, सावित्री नर्सिंग कॉलेज एवं संकर नर्सिंग कॉलेज के शिक्षक शामिल हुए। वर्कशॉप में मिशन निरामया और नर्सिंग केयर पर विशेष और विस्तार से जानकारी दी गई। वर्कशॉप में नर्सिंग ट्यूटर रिंकी सिंह ने नर्सिंग कॉलेज में प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षण वातावरण, कक्षा व्यवस्था, उत्तेजना क्षेत्र और नैदानिक क्षेत्र की तैयारी के बारे में चर्चा की। असिस्टेंट प्रोफेसर ईश्वरी के. ने इंटरएक्टिव प्रेजेंटेशन, असिस्टेंट प्रोफेसर ममता रावत ने ज्ञान मूल्यांकन के बारे में बताया। वर्कशॉप में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी एवं कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव का मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ।

गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग में कार्यशाला का आयोजन

ग्राम स्वराज्य

गोरखपुर, 22 जून। गुरु श्री गोरक्षनाथ कालेज ऑफ नर्सिंग में शिक्षा ग्रहण वर्कशॉप आयोजित किया गया जिसमें गोरखपुर क्षेत्र में स्थित चंद्रमौली नर्सिंग कॉलेज, सावित्री नर्सिंग कॉलेज एवं संकर नर्सिंग कॉलेज के शिक्षक शामिल हुए। वर्कशॉप में मिशन निरामया और नर्सिंग केयर पर विशेष और विस्तार से जानकारी दी गई।वर्कशॉप में नर्सिंग ट्यूटर रिंकी सिंह ने नर्सिंग कॉलेज में प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षण वातावरण, कक्षा व्यवस्था, उत्तेजना क्षेत्र और नैदानिक क्षेत्र की तैयारी के बारे में चर्चा की। असिस्टेंट प्रोफेसर ईश्वरी के. ने इंटरएक्टिव प्रेजेंटेशन, असिस्टेंट प्रोफेसर ममता रावत ने ज्ञान मूल्यांकन के बारे में बताया। वर्कशॉप में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी एवं कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव का मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ।

गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग में कार्यशाला का आयोजन

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। गुरु श्री गोरक्षनाथ कालेज ऑफ नर्सिंग में शिक्षा ग्रहण वर्कशॉप आयोजित किया गया जिसमें गोरखपुर क्षेत्र में स्थित चंद्रमौली नर्सिंग कॉलेज, सावित्री नर्सिंग कॉलेज एवं संकर नर्सिंग कॉलेज के शिक्षक शामिल हुए। वर्कशॉप में मिशन निरामया और नर्सिंग केयर पर विशेष और विस्तार से जानकारी दी गई।

वर्कशॉप में नर्सिंग ट्यूटर रिंकी सिंह ने नर्सिंग कॉलेज में प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षण वातावरण, कक्षा व्यवस्था, उत्तेजना क्षेत्र और नैदानिक क्षेत्र की तैयारी के बारे में चर्चा की। असिस्टेंट प्रोफेसर ईश्वरी के. ने इंटरएक्टिव प्रेजेंटेशन, असिस्टेंट प्रोफेसर ममता रावत ने ज्ञान मूल्यांकन के बारे में बताया। वर्कशॉप में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी एवं कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव का मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ।

समाचार दर्पण

सही उपचार व देखभाल से नियंत्रित किया जा सकता है अस्थमा को : डॉ. तोमर

□ ब्रोंकिओल अस्थमा-तामक श्वासह्व विषय पर व्याख्यान में विश्व आयुर्वेद परिषद के अध्यक्ष ने दिए अस्थमा से बचाव के मंत्र

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर।महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (आयुर्वेद संकाय) के रोग निदान एवं विकृति विज्ञान विभाग द्वारा ह्यब्रोंकिओल अस्थमा-तामक श्वासह्व विषय पर आयोजित व्याख्यान में विश्व आयुर्वेद परिषद के अध्यक्ष एवं लाल बहादुर शास्त्री आयुर्वेदिक महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. जीएस तोमर ने अस्थमा से बचाव के मंत्र दिए। डॉ. तोमर ने कहा कि अस्थमा एक दीर्घकालिक श्वसन रोग है जिसमें श्वास नलिकाएं सूज जाती हैं और संकीर्ण हो जाती हैं, जिससे श्वास लेने में कठिनाई होती है। इसके लक्षणों में खांसी, घरघराहट, सीने में जकड़न और सांस की कमी शामिल हैं। अस्थमा का दौरा एलर्जी, धूल, धुएं, ठंड, शारीरिक गतिविधि या तनाव से ट्रिगर हो सकता है। इसका इलाज इनहेलर, दवाओं और जीवनशैली में बदलाव से किया जाता है। सही उपचार और देखभाल से अस्थमा को नियंत्रित किया जा सकता है, जिससे रोगी सामान्य जीवन जी सकते हैं। आयुर्वेद में अस्थमा को ह्लतामक श्वासह्व कहा जाता है। यह वात और कफ दोष के असंतुलन के कारण होता है।

डॉ. तोमर ने कहा कि अस्थमा के उपचार में औषधियों के साथ-साथ प्राणायाम, पंचकर्म, विशेष आहार और जीवनशैली में बदलाव की सलाह दी जाती है। तुलसी, अदरक, मुलेठी, शिरीष और हल्दी जैसी जड़ी-बूटियां लाभकारी मानी जाती हैं। आयुर्वेद में तामक श्वास (अस्थमा) की चिकित्सा में वात और कफ दोष को संतुलित करने पर जोर दिया जाता है। इसके अलावा, योग और प्राणायाम जैसे अनुलोम-विलोम और भस्त्रिका श्वास तकनीकें श्वसन तंत्र को मजबूत बनाने में सहायक होती हैं। समग्र दृष्टिकोण से शरीर और मन को संतुलित किया जाता है। उन्होंने कहा कि अस्थमा के नए उपचार और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए प्रतिवर्ष मई के पहले मंगलवार को विश्व अस्थमा दिवस (विश्व अस्थमा दिवस) मनाया जाता है। इस दिवस का मुख्य उद्देश्य अस्थमा से संबंधित मिथकों और भ्रांतियों को दूर कर लोगों में इस बीमारी के प्रति जागरूकता फैलाना है।

निशुल्क आयुर्वेदिक स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर में देखे गए 148 मरीज*

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज बालापार में निशुल्क आयुर्वेद चिकित्सा शिविर में डॉ. जीएस तोमर ने 148 मरीजों को चिकित्सकीय परामर्श दिया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि आज के समय में दुनिया आयुर्वेद चिकित्सा का तेजी से अनुसरण कर रही है। आयुर्वेद में जीवनशैली परिवर्तन, प्राकृतिक चिकित्सा, और आहार पर ध्यान दिया जाए तो जटिल और गंभीर रोग का उपचार शत प्रतिशत संभव है।

सूचना-सर्वसाधारण को

इलाज से नियंत्रित होता है अस्थमा

व्याख्यान

गोरखनाथ विश्वविद्यालय में शनिवार को व्याख्यान देते डॉ. जी एस तोमर।

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (आयुर्वेद संकाय) के रोग निदान एवं विकृति विज्ञान विभाग द्वारा ब्रोंकियल अस्थमा-तामक श्वास विषय पर शनिवार को व्याख्यान आयोजित हुआ। विश्व आयुर्वेद परिषद के अध्यक्ष एवं लाल बहादुर शास्त्री आयुर्वेदिक महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. जीएस तोमर ने अस्थमा से बचाव के मंत्र दिए।

डॉ. तोमर ने कहा कि अस्थमा एक दीर्घकालिक श्वसन रोग है। इसमें श्वास नलिकाएं सूज कर संकीर्ण हो जाती हैं। जिससे श्वास लेने में कठिनाई होती है। इसके लक्षणों में खांसी, घरघराहट, सीने में जकड़न और सांस की कमी शामिल है। अस्थमा का दौरा एलर्जी, धूल, धुएं, ठंड, शारीरिक गतिविधि या तनाव से ट्रिगर हो सकता है। सही उपचार और देखभाल से अस्थमा को नियंत्रित किया जा सकता है। रोगी सामान्य जीवन जी सकते हैं।

डॉ. तोमर ने कहा कि अस्थमा के उपचार में औषधियों के साथ-साथ प्राणायाम, पंचकर्म, विशेष आहार और जीवनशैली में बदलाव की सलाह दी जाती है। इस दौरान आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ मंजूनाथ एनएस, डॉ. राजेश बहल, डॉ सार्वभौम, डॉ दीपू, डॉ अश्वथि, डॉ प्रज्ञा, डॉ अभिजीत, साध्वी नंदन पांडेय, डॉ संध्या पाठक मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन शाम्भवी शुक्ला ने किया है।

सही उपचार व देखभाल से नियंत्रित किया जा सकता है अस्थमा को : डॉ. तोमर

'ब्रोंकिओल अस्थमा-तामक श्वास' विषय पर व्याख्यान में विश्व आयुर्वेद परिषद के अध्यक्ष ने दिए अस्थमा से बचाव के मंत्र

रवि प्रकाश गुप्ता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (आयुर्वेद संकाय) के रोग निदान एवं विकृति विज्ञान विभाग द्वारा ह्यब्रोंकिओल अस्थमा-तामक श्वासह्व विषय पर आयोजित व्याख्यान में विश्व आयुर्वेद परिषद के अध्यक्ष एवं लाल बहादुर शास्त्री आयुर्वेदिक महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. जीएस तोमर ने अस्थमा से बचाव के मंत्र दिए। डॉ. तोमर ने कहा कि अस्थमा एक दीर्घकालिक श्वसन रोग है जिसमें श्वास नलिकाएं सूज जाती हैं और संकीर्ण हो जाती हैं, जिससे श्वास लेने में कठिनाई होती है। इसके लक्षणों में खांसी, घरघराहट, सीने में जकड़न और सांस की कमी शामिल हैं। अस्थमा का दौरा एलर्जी, धूल, धुएं, ठंड, शारीरिक गतिविधि या तनाव से ट्रिगर हो सकता है। इसका इलाज इनहेलर, दवाओं और जीवनशैली में बदलाव से किया जाता है। सही उपचार और देखभाल से अस्थमा को नियंत्रित किया जा सकता है, जिससे रोगी सामान्य जीवन जी सकते हैं। आयुर्वेद में अस्थमा को "तामक श्वास" कहा जाता है। यह वात और कफ दोष के असंतुलन के कारण होता है। डॉ. तोमर ने कहा कि अस्थमा के उपचार में औषधियों के साथ-साथ प्राणायाम, पंचकर्म, विशेष आहार और जीवनशैली में बदलाव की सलाह दी जाती है। तुलसी, अदरक, मुलेठी, शिरीष और हल्दी जैसी जड़ी-बूटियां लाभकारी मानी जाती हैं। आयुर्वेद में तामक श्वास (अस्थमा) की चिकित्सा में वात और कफ दोष को संतुलित करने पर जोर दिया जाता है। इसके अलावा, योग और प्राणायाम जैसे अनुलोम-विलोम और भस्त्रिका श्वास तकनीकें श्वसन तंत्र को मजबूत बनाने में सहायक होती हैं। समग्र दृष्टिकोण से शरीर और मन को संतुलित किया जाता है। उन्होंने कहा कि अस्थमा के नए उपचार और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए प्रतिवर्ष मई के पहले मंगलवार को विश्व अस्थमा दिवस (विश्व अस्थमा दिवस) मनाया जाता है। इस दिवस का मुख्य उद्देश्य अस्थमा से संबंधित मिथकों और भ्रांतियों को दूर कर लोगों में इस बीमारी के प्रति जागरूकता फैलाना है। अतिथि व्याख्यान मे आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ मंजूनाथ एनएस, महंत दिग्विजयनाथ चिकित्सालय के डायरेक्टर डॉ. राजेश बहल, रोग निदान विभाग के सहायक आचार्य डॉ सार्वभौम ,सहित डॉ दीपू, डॉ अश्वथि, डॉ प्रज्ञा, डॉ अभिजीत, श्री साध्वी नंदन पांडेय सहित सभी चरक सत्र के विद्यार्थी उपस्थित रहे। रोग निदान विभाग की सह आचार्या डॉ संध्या पाठक ने कार्यक्रम के अंत मे विशिष्ट अतिथि एवं कार्यक्रम मे उपस्थित सभी लोगों का आभार प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन चरक सत्र की छात्रा कुमारी शाम्भवी शुक्ला ने किया।

निशुल्क आयुर्वेदिक स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर में देखे गए 148 मरीज

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज बालापार में निशुल्क आयुर्वेद चिकित्सा शिविर में डॉ. जीएस तोमर ने 148 मरीजों को चिकित्सकीय परामर्श दिया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि आज के समय में दुनिया आयुर्वेद चिकित्सा का तेजी से अनुसरण कर रही है। आयुर्वेद में जीवनशैली परिवर्तन, प्राकृतिक चिकित्सा, और आहार पर ध्यान दिया जाए तो जटिल और गंभीर रोग का उपचार शत प्रतिशत संभव है। शिविर में गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज के निदेशक डॉ. कर्नल राजेश बहल, आयुर्वेद कालेज के प्राचार्य डॉ. मंजूनाथ, अस्पताल प्रबंधक जीके मिश्रा सहित सभी चिकित्सकों ने सहयोग किया।

उपचार से नियंत्रित किया जा सकता है अस्थमा

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में व्याख्यान देते डा. जीएस तोमर • सौ. गोवि

गोरखपुर : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेस में रोग निदान और विकृति विज्ञान विभाग की ओर से शनिवार को 'ब्रोंकिओल अस्थमा-तामक श्वास' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान में बतौर मुख्य वक्ता संबोधित करते हुए विश्व आयुर्वेद परिषद के अध्यक्ष एवं लाल बहादुर शास्त्री आयुर्वेदिक महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डा. जीएस तोमर ने अस्थमा से बचाव के मंत्र दिए।

डा. तोमर ने कहा कि अस्थमा एक दीर्घकालिक श्वसन रोग है, जिसमें श्वास नलिकाएं सूज जाती हैं और संकीर्ण हो जाती हैं। इससे सांस लेने में कठिनाई होती है।

इसके लक्षणों में खांसी, घरघराहट, सीने में जकड़न और सांस की कमी शामिल हैं। अस्थमा का दौरा एलर्जी, धूल, धुएं, ठंड, शारीरिक गतिविधि या तनाव से हो सकता है। इसका इलाज इन्हेलर, दवाओं और जीवनशैली में बदलाव से किया जाता है। सही उपचार और देखभाल से अस्थमा को नियंत्रित किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि अस्थमा के नए उपचार और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए प्रतिवर्ष मई के पहले मंगलवार को विश्व अस्थमा दिवस (विश्व अस्थमा दिवस) मनाया जाता है।

इस अवसर पर चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 148 लोगों के स्वास्थ्य की जांच की गई और चिकित्सीय परामर्श दिया गया। इस दौरान कर्नल डा. राजेश बहल, डा. मंजूनाथ, जीके मिश्रा आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन छात्रा शांभवी शुक्ला ने किया। (विज्ञप्ति)

सही उपचार व देखभाल से नियंत्रित हो जाता है अस्थमा: डॉ. तोमर

[illegible]

समाचार दर्पण

लोक भारती

गोरखपुर/देवरिया

सही उपचार व देखभाल से नियंत्रित किया जा सकता है अस्थमा : डॉ. तोमर

ब्रोंकिओल अस्थमा-तामक श्वास' विषय पर व्याख्यान में विश्व आयुर्वेद परिषद के अध्यक्ष ने दिए अस्थमा से बचाव के मंत्र

लोक भारती न्यूज ब्यूरो

गोरखपुर, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (आयुर्वेद संकाय) के रोग निदान एवं विकृति विज्ञान विभाग द्वारा 'ब्रोंकिओल अस्थमा-तामक श्वास' विषय पर आयोजित व्याख्यान में विश्व आयुर्वेद परिषद के अध्यक्ष एवं लाल बहादुर शास्त्री आयुर्वेदिक महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. जीएस तोमर ने अस्थमा से बचाव के मंत्र दिए।

डॉ. तोमर ने कहा कि अस्थमा एक दीर्घकालिक श्वसन रोग है जिसमें श्वास नलिकाएं सूज जाती हैं और संकीर्ण हो जाती हैं, जिससे श्वास लेने में कठिनाई होती है इसके लक्षणों में खांसी, घरघराहट, सीने में जकड़न और सांस की कमी शामिल है। अस्थमा का दौरा एलर्जी, धूल, धुएं, ठंड, शारीरिक गतिविधि या तनाव से ट्रिगर हो सकता है। इसका इलाज इनहेलर, दवाओं और जीवनशैली में बदलाव से किया जाता है। सही उपचार और देखभाल से अस्थमा को नियंत्रित किया जा सकता है, जिससे रोगी सामान्य जीवन जी सकते हैं। आयुर्वेद में अस्थमा को तामक श्वास कहा जाता है। यह वात और कफ दोष के असंतुलन के कारण होता है।

डॉ. तोमर ने कहा कि अस्थमा के उपचार में औषधियों के साथ-साथ प्राणायाम, पंचकर्म, विशेष आहार और जीवनशैली में बदलाव की सलाह दी जाती है तुलसी, अदरक, मुलेठी, शिरीष और हल्दी जैसी जड़ी-बूटियां लाभकारी मानी जाती हैं आयुर्वेद में तामक श्वास (अस्थमा) की चिकित्सा में वात और कफ दोष को संतुलित करने पर जोर दिया जाता है। इसके अलावा, योग और प्राणायाम जैसे अनुलोम-विलोम और भस्त्रिका श्वास तकनीकें श्वसन तंत्र को मजबूत बनाने में सहायक होती हैं। समग्र दृष्टिकोण से शरीर और मन को संतुलित किया जाता है। उन्होंने कहा कि अस्थमा के नए उपचार और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए, प्रतिवर्ष मई के पहले मंगलवार को विश्व अस्थमा दिवस (विश्व अस्थमा दिवस) मनाया जाता है। इस दिवस का मुख्य उद्देश्य अस्थमा से संबंधित मिथकों और भ्रांतियों को दूर कर लोगों में इस बीमारी के प्रति जागरूकता फैलाना है।

अतिथि व्याख्यान में आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ मंजूनाथ एनएस, महंत दिग्विजयनाथ चिकित्सालय के डायरेक्टर डॉ. राजेश बहल, रोग निदान विभाग के सहायक आचार्य डॉ सार्वभौम ,सहित डॉ दीपू, डॉ अश्वथि, डॉ प्रज्ञा, डॉ अभिजीत, श्री साध्वी नंदन पांडेय सहित सभी चरक सत्र के विद्यार्थी उपस्थित रहे। रोग निदान विभाग की सह आचार्या डॉ संध्या पाठक ने कार्यक्रम के अंत मे विशिष्ट अतिथि एवं कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों का आभार प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन चरक सत्र की छात्रा कुमारी शाम्भवी शुक्ला ने किया।

निशुल्क आयुर्वेदिक स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर में देखे गए 148 मरीज: गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज बालापार में निशुल्क आयुर्वेद चिकित्सा शिविर में डॉ. जीएस तोमर ने 148 मरीजों को चिकित्सकीय परामर्श दिया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि आज के समय में दुनिया आयुर्वेद चिकित्सा का तेजी से अनुसरण कर रही है। आयुर्वेद में जीवनशैली परिवर्तन, प्राकृतिक चिकित्सा, और आहार पर ध्यान दिया जाए तो जटिल और गंभीर रोग का उपचार शत प्रतिशत संभव है। शिविर में गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज के निदेशक डॉ. कर्नल राजेश बहल, आयुर्वेद कालेज के प्राचार्य डॉ. मंजूनाथ, अस्पताल प्रबंधक जीके मिश्रा सहित सभी चिकित्सकों ने सहयोग किया।

सही उपचार से नियंत्रित किया जा सकता है अस्थमा कोः डॉ. तोमर

ब्रोंकिओल अस्थमा-तामक श्वास' विषय पर व्याख्यान में विश्व आयुर्वेद परिषद के अध्यक्ष ने दिए अस्थमा से बचाव के मंत्र

स्वतंत्र भारत संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (आयुर्वेद संकाय) के रोग निदान एवं विकृति विज्ञान विभाग द्वारा 'ब्रोंकिओल अस्थमा-तामक श्वास' विषय पर आयोजित व्याख्यान में विश्व आयुर्वेद परिषद के अध्यक्ष एवं लाल बहादुर शास्त्री आयुर्वेदिक महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. जीएस तोमर ने अस्थमा से बचाव के मंत्र दिए।

डॉ. तोमर ने कहा कि अस्थमा एक दीर्घकालिक श्वसन रोग है जिसमें श्वास नलिकाएं सूज जाती हैं और संकीर्ण हो जाती हैं, जिससे श्वास लेने में कठिनाई होती है। इसके लक्षणों में खांसी, घरघराहट, सीने में जकड़न और सांस की कमी शामिल हैं। अस्थमा का दौरा एलर्जी, धूल, धुएं, ठंड, शारीरिक

गतिविधि या तनाव से ट्रिगर हो सकता है। इसका इलाज इनहेलर, दवाओं और जीवनशैली में बदलाव से किया जाता है। सही उपचार और देखभाल से अस्थमा को नियंत्रित किया जा सकता है, जिससे रोगी सामान्य जीवन जी सकते हैं। आयुर्वेद में अस्थमा को ÷तामक श्वास÷ कहा जाता है। यह वात और कफ दोष के असंतुलन के कारण होता है। डॉ. तोमर ने कहा कि अस्थमा के उपचार में औषधियों के साथ-साथ प्राणायाम, पंचकर्म, विशेष आहार और जीवनशैली में बदलाव की सलाह दी जाती है। तुलसी, अदरक, मुलेठी, शिरीष और हल्दी जैसी जड़ी-बूटियां लाभकारी मानी जाती हैं। आयुर्वेद में तामक श्वास (अस्थमा) की चिकित्सा में वात और कफ दोष को संतुलित करने पर जोर दिया जाता है। इसके अलावा, योग और प्राणायाम जैसे अनुलोम-विलोम और भस्त्रिका श्वास तकनीकें श्वसन तंत्र को मजबूत बनाने में सहायक होती हैं। समग्र दृष्टिकोण से शरीर और मन को संतुलित किया जाता है। उन्होंने कहा कि अस्थमा के नए उपचार और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए प्रतिवर्ष मई के पहले मंगलवार को विश्व अस्थमा दिवस मनाया जाता है। इस दिवस का मुख्य उद्देश्य अस्थमा से संबंधित मिथकों और भ्रांतियों को दूर कर लोगों में इस बीमारी के प्रति जागरूकता फैलाना है। अतिथि व्याख्यान मे आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ मंजूनाथ एनएस, महंत दिग्विजयनाथ चिकित्सालय के डायरेक्टर डॉ. राजेश बहल, रोग निदान विभाग के सहायक आचार्य डॉ सार्वभौम ,सहित डॉ दीपू, डॉ अश्वथि, डॉ प्रज्ञा, डॉ अभिजीत, श्री साध्वी नंदन पांडेय सहित सभी चरक सत्र के विद्यार्थी उपस्थित रहे। रोग निदान विभाग की सह आचार्या डॉ संध्या पाठक ने कार्यक्रम के अंत मे विशिष्ट अतिथि उपस्थित सभी लोगों का आभार प्रस्तुत किया।

सही उपचार व देखभाल से नियंत्रित किया जा सकता है अस्थमा को : डॉ. तोमर

'ब्रोंकिओल अस्थमा-तामक श्वास' विषय पर व्याख्यान में विश्व आयुर्वेद परिषद के अध्यक्ष ने दिये अस्थमा से बचाव के मंत्र

ग्राम स्वराज्य

गोरखपुर, 22 जून। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (आयुर्वेद संकाय) के रोग निदान एवं विकृति विज्ञान विभाग द्वारा 'ब्रोंकिओल अस्थमा-तामक श्वास' विषय पर आयोजित व्याख्यान में विश्व आयुर्वेद परिषद के अध्यक्ष एवं लाल बहादुर शास्त्री आयुर्वेदिक महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. जीएस तोमर ने अस्थमा से बचाव के मंत्र दिए। डॉ. तोमर ने कहा कि अस्थमा एक दीर्घकालिक श्वसन रोग है जिसमें श्वास नलिकाएं सूज जाती हैं और संकीर्ण हो जाती हैं, जिससे श्वास लेने में कठिनाई होती है। इसके लक्षणों में खांसी, घरघराहट, सीने में जकड़न और सांस की कमी शामिल हैं। अस्थमा का दौरा एलर्जी, धूल, धुएं, ठंड, शारीरिक गतिविधि या तनाव से ट्रिगर हो सकता है। इसका इलाज इनहेलर, दवाओं और जीवनशैली में बदलाव से किया जाता है। सही उपचार और देखभाल से अस्थमा को नियंत्रित किया जा सकता है, जिससे रोगी सामान्य जीवन जी सकते हैं। आयुर्वेद में अस्थमा को ष्तामक श्वासष् कहा जाता है। यह वात और कफ दोष के असंतुलन के कारण होता है।

डॉ. तोमर ने कहा कि अस्थमा के उपचार में औषधियों के साथ-साथ प्राणायाम, पंचकर्म, विशेष आहार और जीवनशैली में बदलाव की सलाह दी जाती है। तुलसी, अदरक, मुलेठी, शिरीष और हल्दी जैसी जड़ी-बूटियां लाभकारी मानी जाती हैं। आयुर्वेद में तामक श्वास (अस्थमा) की चिकित्सा में वात और कफ दोष को संतुलित करने पर जोर दिया जाता है। इसके अलावा, योग और प्राणायाम जैसे अनुलोम-विलोम और भस्त्रिका श्वास तकनीकें श्वसन तंत्र को मजबूत बनाने में सहायक होती हैं। समग्र दृष्टिकोण से शरीर और मन को संतुलित किया जाता है। उन्होंने

कहा कि अस्थमा के नए उपचार और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए प्रतिवर्ष मई के पहले मंगलवार को विश्व अस्थमा दिवस (विश्व अस्थमा दिवस) मनाया जाता है। इस दिवस का मुख्य उद्देश्य अस्थमा से संबंधित मिथकों और भ्रांतियों को दूर कर लोगों में इस बीमारी के प्रति जागरूकता फैलाना है। अतिथि व्याख्यान मे आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ मंजूनाथ एनएस, महंत दिग्विजयनाथ चिकित्सालय के डायरेक्टर डॉ. राजेश बहल, रोग निदान विभाग के सहायक आचार्य डॉ सार्वभौम ,सहित डॉ दीपू, डॉ अश्वथि, डॉ प्रज्ञा, डॉ अभिजीत, श्री साध्वी नंदन पांडेय सहित सभी चरक सत्र के विद्यार्थी उपस्थित रहे। रोग निदान विभाग की सह आचार्या डॉ संध्या पाठक ने कार्यक्रम के अंत मे विशिष्ट अतिथि एवं कार्यक्रम मे उपस्थित सभी लोगों का आभार प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन चरक सत्र की छात्रा कुमारी शाम्भवी शुक्ला ने किया।

निशुल्क आयुर्वेदिक स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर में देखे गए 148 मरीज

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज बालापार में निशुल्क आयुर्वेद चिकित्सा शिविर में डॉ. जीएस तोमर ने 148 मरीजों को चिकित्सकीय परामर्श दिया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि आज के समय में दुनिया आयुर्वेद चिकित्सा का तेजी से अनुसरण कर रही है। आयुर्वेद में जीवनशैली परिवर्तन, प्राकृतिक चिकित्सा, और आहार पर ध्यान दिया जाए तो जटिल और गंभीर रोग का उपचार शत प्रतिशत संभव है। शिविर में गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज के निदेशक डॉ. कर्नल राजेश बहल, आयुर्वेद कालेज के प्राचार्य डॉ. मंजूनाथ, अस्पताल प्रबंधक जीके मिश्रा सहित सभी चिकित्सकों ने सहयोग किया।

योग, सही उपचार, देखभाल है अस्थमा की संजीवनी - डॉ . जी यस. तोमर

आयुर्वेद संकाय के रोग निदान एवं विकृति विज्ञान विभाग में 'ब्रोंकियल अस्थमा- तमक श्वास' विषय पर व्याख्यान में डॉ. गिरेन्द्र सिंह तोमर ने दिया अस्थमा से बचाव का मंत्र

गोरखपुर । महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस, आयुर्वेद संकाय के रोग निदान एवं विकृति विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित व्याख्यान 'ब्रोंकियल अस्थमा-तमक श्वास' विषय पर विशिष्ट अतिथि डॉ. गिरेन्द्र सिंह तोमर, पूर्व प्राचार्य लाल बहादुर शास्त्री आयुर्वेदिक महाविद्यालय एवं चिकित्सालय एवं विश्व आयुर्वेद परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने विद्यार्थियों को अस्थमा से बचाव पर पर व्याख्यान दिया।डॉ. तोमर ने बताया कि अस्थमा एक दीर्घकालिक श्वसन रोग है जिसमें श्वास नलिकाएं सूज जाती हैं और संकीर्ण हो जाती हैं, जिससे श्वास लेने में कठिनाई होती है। इसके लक्षणों में खांसी, घरघराहट, सीने में जकड़न और सांस की कमी शामिल हैं। अस्थमा का दौरा एलर्जी, धूल, धुएं, ठंड, शारीरिक गतिविधि या तनाव से ट्रिगर हो सकता है। इसका इलाज इनहेलर, दवाओं और जीवनशैली में बदलाव से किया जाता है। सही उपचार और देखभाल से अस्थमा को नियंत्रित किया जा सकता है, जिससे रोगी सामान्य जीवन जी सकते हैं।आयुर्वेद में अस्थमा को 'तमक श्वास' कहा जाता है। यह वात और कफ दोष के असंतुलन के कारण होता है। इसके उपचार में औषधियों के साथ-साथ प्राणायाम, पंचकर्म, विशेष आहार और जीवनशैली में बदलाव की सलाह दी जाती हैं। तुलसी, अदरक, मुलेठी, शिरीष और हल्दी जैसी जड़ी-बूटियां लाभकारी मानी जाती हैं। आयुर्वेद में तमक श्वास (अस्थमा) की चिकित्सा में वात और कफ दोष को संतुलित करने पर जोर दिया जाता है। इसके अलावा, योग और प्राणायाम जैसे अनुलोम-विलोम और भस्त्रिका श्वास तकनीकें श्वसन तंत्र को मजबूत बनाने में सहायक होती हैं। समग्र दृष्टिकोण से शरीर और मन को संतुलित किया जाता है।अस्थमा के नए उपचार और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए प्रतिवर्ष मई के पहले मंगलवार को विश्व अस्थमा दिवस (विश्व अस्थमा दिवस) मनाया जाता है। इस दिवस का मुख्य उद्देश्य अस्थमा से संबंधित मिथकों और भ्रांतियों को दूर कर लोगों में इस बीमारी के प्रति जागरूकता फैलाना है। अतिथि व्याख्यान मे आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ मंजूनाथ एन एस, महंत दिग्विजय नाथ चिकित्सालय के डायरेक्टर डॉ. राजेश बहल, रोग निदान विभाग के सहायक आचार्य डॉ सार्वभौम ,सहित डॉ दीपू, डॉ अश्वथि, डॉ प्रज्ञा, डॉ अभिजीत, श्री साध्वी नंदन पांडेय सहित सभी चरक सत्र के विद्यार्थी उपस्थित रहे। रोग निदान विभाग की सह आचार्या डॉ संध्या पाठक ने कार्यक्रम के अंत मे विशिष्ट अतिथि एवं कार्यक्रम मे उपस्थित सभी श्रोताओं का आभार प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन चरक सत्र की छात्रा कुमारी शाम्भवी शुक्ला ने किया।

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज बालापार में निशुक्ल आयुर्वेदिक स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर में देखे गए 148 मरीज

गुरू गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज बालापार में निशुल्क आयुर्वेद चिकित्सा शिविर में डॉ. जी .यस .तोमर ने 148 मरीजों को निशुल्क चिकित्सकीय परामर्श दिया

बालापार। डॉ जी यस तोमर ने कहा कि आयुर्वेद विश्व की प्राचीन चिकित्सा पद्धति है। आज के समय में दुनिया आयुर्वेद चिकित्सा का तेजी से अनुसरण कर रहे हैं । आयुर्वेद में जीवनशैली परिवर्तन, प्राकृतिक चिकित्सा, और आहार पर ध्यान दिया जाए तो जटिल और गंभीर रोग का उपचार शत प्रतिशत संभव है । योग, प्राणायाम, और ध्यान के साथ नियमित चिकित्सीय परामर्श से रोगी निरोग रहकर स्वस्थ जीवन जी सकते है । गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज द्वारा आयोजित निशुल्क आयुर्वेद चिकित्सा शिविर में डॉ जी यस तोमर ने शिविर में विभिन्न रोगों से ग्रसित 148 रोगियों को उपचार परामर्श दिया । उन्होंने कहा कि आज के समय में अस्थमा , स्पाइन, गठिया और अन्य समस्याएं खान पान अनियमित दिनचर्या से प्रभावित हो रही हैं। सही उपचार के लिए आयुर्वेद में जीवनशैली परिवर्तन, प्राकृतिक चिकित्सा, और

आहार पर ध्यान देने की आवश्यकता है । योग, प्राणायाम, और ध्यान से जटिल रोगों को नियंत्रित किया जा सकता है। ओपीडी में मरीजों को चिकित्सकीय परामर्श देते हुए कहा कि डॉक्टर तोमर ने कहा कि आजकल लोगों का आयुर्वेद की तरफ रुझान बढ़ रहा हत क्योंकि इसका कोई साइड इफेक्ट नहीं है और आसपास की जड़ी बूटियां से और खान-पान में सुधार करके हम अपना स्वस्थ जीवन जी सकते हैं ।

शिविर में गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज के निदेशक डॉ. कर्नल राजेश बहल ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्विवालय गोरखपुर शिक्षा के साथ चिकित्सा क्षेत्र में भी जन मानस की सेवा करने का पुनीत कार्य कर रहा है। डॉ जी यस तोमर जी आयुर्वेद चिकित्सा क्षेत्र में प्रतिष्ठत है। आज के समय में हर मानव मानसिक तनाव और दर्द से जूझ रहे है ऐसे में सही समय पर कुशल चिकित्सक की सलाह और उपचार स्वयं की स्वस्थ रखा जा सकता है । आयुर्वेद चिकित्सा में व्यायाम, दवाओं का प्रयोग, चिकित्सा फिजिओथेरेपी, योग, या चिकित्सा आसन से चिकित्सा में सुधार हो रहा है। शिविर में आए सभी मरीजों का शुगर, ब्लड प्रेशर , वजन और बी एम डी निशुल्क किया गया । शिविर में आयुर्वेद कालेज के प्रधानाचार्य डा. यस एन.मंजुनाथन , गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज के निदेशक डॉ. कर्नल राजेश बहल एवं प्रबंधक जी .के. मिश्रा सहित सभी चिकित्सकों ने सहयोग किया।

सही उपचार व देखभाल से नियंत्रित किया जा सकता है अस्थमा को : डॉ. तोमर

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (आयुर्वेद संकाय) के रोग निदान एवं विकृति विज्ञान विभाग द्वारा 'ब्रोंकिओल अस्थमा-तामक श्वास' विषय पर आयोजित व्याख्यान में विश्व आयुर्वेद परिषद के अध्यक्ष एवं लाल बहादुर शास्त्री आयुर्वेदिक महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. जीएस तोमर ने अस्थमा से बचाव के मंत्र दिए। डॉ. तोमर ने कहा कि अस्थमा एक दीर्घकालिक श्वसन रोग है जिसमें श्वास नलिकाएं सूज जाती हैं और संकीर्ण हो जाती हैं, जिससे श्वास लेने में कठिनाई होती है। इसके लक्षणों में खांसी, घरघराहट, सीने में जकड़न और सांस की कमी शामिल हैं। अस्थमा का दौरा एलर्जी, धूल, धुएं, ठंड, शारीरिक गतिविधि या तनाव से ट्रिगर हो सकता है। इसका इलाज इनहेलर, दवाओं और जीवनशैली में बदलाव से किया जाता है। सही उपचार और देखभाल से अस्थमा को नियंत्रित किया जा सकता है, जिससे रोगी सामान्य जीवन जी सकते हैं। आयुर्वेद में अस्थमा को तामक श्वास कहा जाता है। यह वात और कफ दोष के असंतुलन के कारण होता है। अतिथि व्याख्यान मे आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ मंजूनाथ एनएस, महंत दिग्विजयनाथ चिकित्सालय के डायरेक्टर डॉ. राजेश बहल, रोग निदान विभाग के सहायक आचार्य डॉ सार्वभौम ,सहित डॉ दीपू, डॉ अश्वथि, डॉ प्रज्ञा, डॉ अभिजीत, श्री साध्वी नंदन पांडेय सहित सभी चरक सत्र के विद्यार्थी उपस्थित रहे। रोग निदान विभाग की सह आचार्या डॉ संध्या पाठक ने कार्यक्रम के अंत मे विशिष्ट अतिथि एवं कार्यक्रम मे उपस्थित सभी लोगों का आभार प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन चरक सत्र की छात्रा कुमारी शाम्भवी शुक्ला ने किया। गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज बालापार में निशुल्क आयुर्वेद चिकित्सा शिविर में डॉ. जीएस तोमर ने 148 मरीजों को चिकित्सकीय परामर्श दिया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि आज के समय में दुनिया आयुर्वेद चिकित्सा का तेजी से अनुसरण कर रही है। आयुर्वेद में जीवनशैली परिवर्तन, प्राकृतिक चिकित्सा, और आहार पर ध्यान दिया जाए तो जटिल और गंभीर रोग का उपचार शत प्रतिशत संभव है।

अभाविप स्थापना दिवस पर रथ यात्रा के माध्यम से चलाएगी परिसर चलो अभियान

गोरखपुर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक 7-9 जून को सूरत में संपन्न हुई, जिसमें विद्यार्थी परिषद ने विभिन्न विषयों पर महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के प्रांत मंत्री मयंक राय ने आज गोरखपुर प्रेस क्लब में आयोजित हुई प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण हेतु अभाविप गोरक्ष प्रांत का 27 जून से 30 जून तक पडरौना जिले के खड्डा में अभ्यास वर्ग आयोजित होगा, जिसमें अभाविप की कार्यक्षेत्र आयामों, गतिविधि व कार्य के माध्यम से कार्यकर्ताओं को कृषि, पर्यावरण, सेवा, तकनीकी, स्टॉर्ट-अप, कला, संस्कृति आदि के माध्यम से समाज के प्रत्येक समुदाय के उत्थान हेतु सशक्त किया जाएगा। इस अभ्यास वर्ग में कार्यकर्ताओं को अभाविप की कार्यपद्धति से परिचित करवाने व सामाजिक व शैक्षिक चुनौतियों से निपटने के लिए प्रशिक्षण दिया जायेगा।

निर्माणाधीन परिसर

01 निमार्णाधीन क्रीड़ांगन

02 निर्माणाधीन फार्मेसी संकाय

03 निर्माणाधीन प्रेक्षागृह

04 निर्माणाधीन शिक्षक आवास

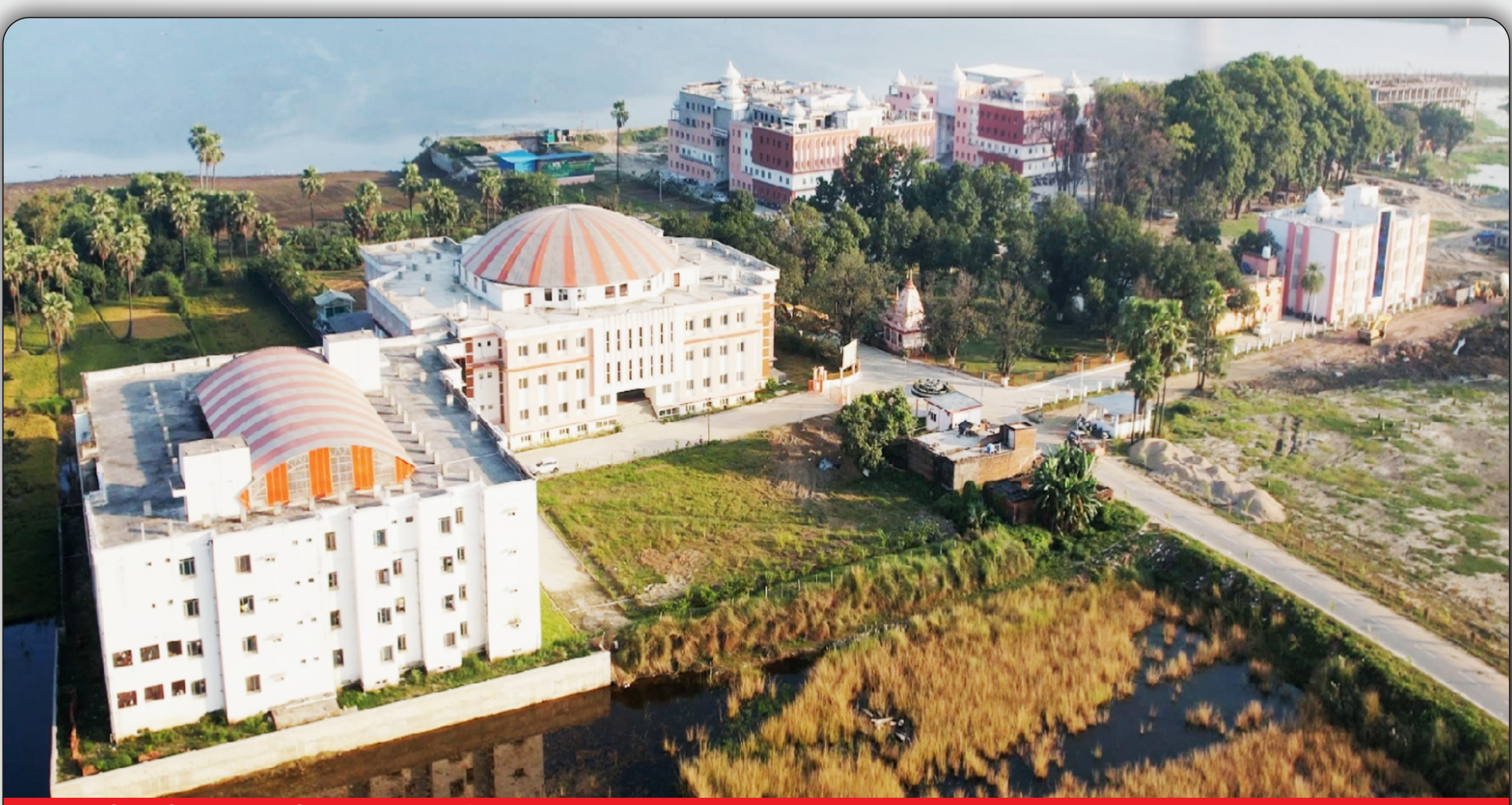

05 विश्वविद्यालय परिसर का वायवीय दृश्य

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

01 पौधरोपण

02 डॉ. जी.एस. तोमर

03 वर्कशॉप

04 एडमिशन : डाक्यूमेंट वेरिफिकेशन

05 समझौता ज्ञापन

06 समझौता ज्ञापन

07 मरीजों को परामर्श देते हुए डॉ. जी.एस. तोमर जी

08 योग दिवस कार्यक्रम

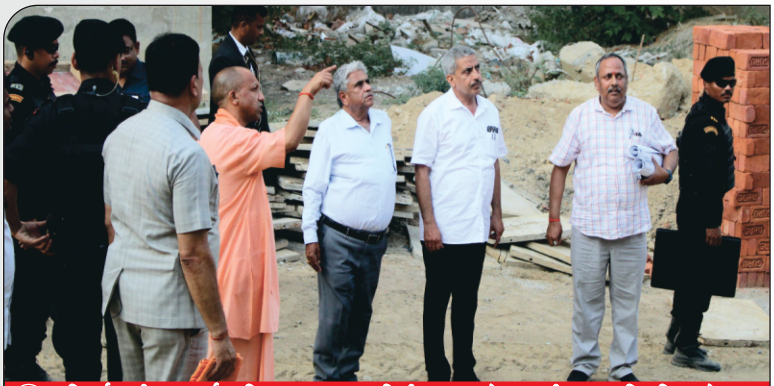

09 निर्माणाधीन फार्मास्युटिकल भवन का निरीक्षण करते माननीय कुलाधिपति महोदय

10 निर्माणाधीन मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल का निरीक्षण करते माननीय कुलाधिपति महोदय

प्रधान सम्पादक
डॉ. विमल कुमार दूबे

सम्पादक
आचार्य साध्वीनन्दन पाण्डेय

संपादक मण्डल
श्री रोहित श्रीवास्तव, डॉ. प्रज्ञा सिंह, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. कुलदीप सिंह एवं सुश्री स्वेता अल्बर्ट

ग्राफिक्स डिजाइनर: श्री शारदानन्द पाण्डेय

mguniversitygkp@mgug.ac.in
https://www.mgug.ac.in/
+91-9415266014, +91-9935904499, +91-9794299451
Arogya Dham, Balapar Road, Sonbarsa, Gorakhpur